चतुर्भुज राक्षस

लक्ष्मी नारायणलाल

चतुर्भुज राक्षस

चतुरभुज राक्षस

[संपूर्ण नाटक]

लक्ष्मीनारायण लाल

मिश्रा ब्रदर्स, अजमेर

प्रकाशक :
बी. एल. मिश्रा,
मिश्रा ब्रदर्स:
पुरानी मंडी, अजमेर ।

प्रथम संस्करण

मूल्य : **पांच रुपये**

मुद्रक :
प्रतापसिंह लूणिया
जॉब प्रिंटिंग प्रेस
ब्रह्मपुरी, अजमेर

परिचय

श्री लक्ष्मीनारायण लाल आधुनिक हिन्दी साहित्य के परम महत्त्वपूर्ण नाटककार, कथाकार और साहित्य के विभिन्न अंगों के मर्मज्ञ और समाज-चिंतक हैं । इन्होंने मौलिक साहित्य सृजन के साथ ही मौलिक जीवन-चिंतन में महत्त्वपूर्ण योग दिया है । जयशंकर 'प्रसाद' के बाद मोहन राकेश और लक्ष्मीनारायण लाल ही वे दो नाटककार हुए हैं, जिन्होंने सच्चे अर्थों में हिन्दी 'नाट्य' को आधुनिक बनाया । विशेषकर लाल का नाम इसलिए सर्वाधिक उल्लेखनीय है कि इन्होंने अपने नाटकों द्वारा भारतीय रंगमंच की जीवंत परम्पराओं और कला प्रेरणाओं को कृतित्व के धरातल से नये संदर्भ दिये । पश्चिम के 'ड्रामा' को उसके अपने रंगमंच और जीवन-प्रकृति के भीतर से देखा है । इन्होंने भारतीय और पाश्चात्य नाट्य के समन्वय-विश्वास का तीव्र खंडन किया है । इनका विश्वास है, पूरब-पश्चिम का कभी भी समन्वय नहीं हो सकता–विशेषकर कला और साहित्य-सृजन के क्षेत्र में ।

जीवन परिचय :

लक्ष्मीनारायण लाल का जन्म चार मार्च उन्नीस सौ सत्ताइस को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के एक गाँव जलालपुर में हुआ । प्रारम्भिक शिक्षण गाँव के स्कूल में और हाई स्कूल, इन्टर की शिक्षा बस्ती में प्राप्त की । प्रयाग विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. (१९५०) और 'कहानियों की शिल्पविधि' पर डाक्ट्रेट (१९५२) ।

इसके बाद प्रयाग विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेजों में प्राध्यापक होकर विश्वविद्यालय की उच्च स्तरीय शिक्षा

और अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण योग दिया। इस बीच कुछ समय के लिए आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र पर ड्रामा प्रोड्यूसर रहे। उन्नीस सौ चौंसठ में विश्वनाट्य सम्मेलन रूमानियां में भारतवर्ष की ओर से अकेले नाटककार के रूप में प्रतिनिधित्व किया। इसके बाद नेशनल ग्रीक थियेटर एथेन्स में आमंत्रित किये गये।

उन्नीस सौ सत्तर में दिल्ली विश्वविद्यालय की नौकरी छोड़, फिर कुछ ही दिनों-नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इंडिया में संपादक के पद से भी त्याग पत्र देने के बाद से डाक्टर लाल एक स्वतंत्र लेखक के रूप में वर्तमान हिन्दी साहित्य के परम सम्मानित, और महत्वपूर्ण कृतिकार के रूप में पूरे भारतवर्ष भर में प्रतिष्ठित हैं।

कृतियां :

'मादा कैक्टस' नाट्यकृति के साथ लाल ने हिन्दी नाट्य क्षेत्र में पदार्पण किया। इसके पूर्व कुछ एकांकी लिखकर और प्रयाग विश्व-विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत कर विद्यार्थी जीवन में ही लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। वे एकांकी 'ताजमहल के आंसू' और 'पर्वत के पीछे' एकांकी संग्रहों में तभी प्रकाशित हुए।

इलाहाबाद में 'नाट्य केन्द्र, स्कूल आफ ड्रेमेटिक आर्टस' की स्थापना और संचालन किया। उस काल की नाट्य कृतियां हैं— 'सुन्दर रस' 'रातरानी' 'नाटक तोता मैना' 'दर्पन' और 'रक्त कमल'। ये नाटक पूरे हिन्दी क्षेत्र में प्रस्तुत हुए। कलकत्ता, दिल्ली और बम्बई की प्रसिद्ध नाट्य संस्थाओं—अनामिका, थियेटर युनिट आदि ने इनके नाटकों को खेलकर एक नया अध्याय शुरू किया।

दिल्ली के जीवन काल में क्रमशः 'कलंकी' 'मिस्टर अभिमन्यु' 'सूर्यमुख' 'करफ्यू' 'अब्दुल्ला दीवाना' और 'व्यक्तिगत' नाटकों की रचना की। ये नाटक 'संवाद' 'नेशनल स्कूल आफ ड्रामा' 'यांत्रिक' और 'अभियान' जैसी प्रसिद्ध रंगसंस्थाओं, मंडलियों द्वारा खेले गये।

मौलिक नाट्य रचना के साथ ही साथ रंगमंच प्रदर्शन निर्देशन और नाट्य प्रशिक्षण से गहरे रूप में सम्बद्ध होने के कारण डा. लाल ने रंगमंच अनुसंधान क्षेत्र में तीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथ दिये—'रंगमंच और नाटक की भूमिका' 'पारसी हिन्दी रंगमंच' और 'हिन्दी रंगमंच और नाटक'।

कथा साहित्य में लाल के प्रसिद्ध उपन्यास हैं—'मन वृन्दावन' 'बड़ी चंपा छोटी चंपा' 'प्रेम अपवित्र नदी' 'हरा समुन्दर गोपी चन्दर।'

यह नाटक

'चतुरभुज राक्षस' नाटक ग्राम जीवन और लोक समाज का यथार्थ-वादी नाटक है। पर चूँकि यह लोक जीवन पर आधारित है और वह जीवन-समाज लोक रंगमंच के इतने समीप है कि इसे भुलाया नहीं जा सकता। इसीलिये इसके यथार्थवादी नाट्य में अनेक रूपों और स्तरों से अयथार्थवादी नाट्य का सहज योग है।

इसकी बुनियादी कथा, मैना का अपने घर आये हुए दो मुसाफिरों को उस तरह मारना, लोक गाथा अथवा लोक कथा के ही अनुरूप है। और उसी लोक कथा, लोक रंगमंच की प्रेरणाओं के भीतर से ही इसे प्रयुक्त किया गया है।

इस नाटक में सारे यथार्थवादी चरित्रों के बीच देवतन के रूप में तीन शुभ्र पुरुषों को प्रकट किया गया है। ये नाटक के चरित्र नहीं है, नाटक की कथा भूमि और मैना के चरित्र के संस्कार हैं। इनके अवतरण से नाटक को लोक रंगमंच की एक गहरी शक्ति ही नहीं मिलती, बल्कि पूरे नाटक को, इसके रूपबंध, और रंगमंच स्वरूप को, तथा इसके कथ्य को व्यापक और गहन अर्थवत्ता मिलती है।

नाटक में नटुआ—लोक रंगमंच का आधुनिक सूत्रधार है, संगीत है, लोक लीला है और यथार्थ का अपने ही सहज ढंग का संघर्ष है— इन सबसे, इस नाटक का जो व्यक्तित्व बनता है, वह निश्चय ही आधुनिक हिन्दी नाट्य और रंगमंच का महान उदाहरण है। क्योंकि यह संस्कार से, विचार से, स्वरूप और उद्देश्य से अपनी भूमि के जीवन तत्त्वों और कलागत प्रेरणाओं से रचित है।

यथार्थ और अयथार्थ के योग से इस नाटक में काव्य रस पैदा हुआ है। इसके रंगमंच में एक अदभुत शक्ति निर्मित हुई है।

कथानक और विषयवस्तु: जैसा कि संकेत दिया जा चुका है इसका कथानक एक लोक कथा पर आधारित है। साहूकार का कर्ज न चुका पाने की संभावना, बाढ़ का सर्वनाश तथा उसके पश्चात भंयकर अकाल, उस पर शूद्र—इन सबसे परेशान दुःखी हो मैना का पति गोबरधन मैना और अपने बच्चे को छोड़कर भाग जाता है। मैना अपनी लज्जा और आत्म सम्मान की रक्षा करती हुई अपना और अपने बच्चे सुरजा का पेट पालती है किन्तु जब सुरजा दस वर्ष का होता है तब वह भी उसे छोड़कर चला जाता है। निस्सहाय वह समाज की भेड़ियों जैसी लोलुप आँखों का सामना करने के लिए अन्ततः अपने भय पर काबू पा साहस बटोरती है, संघर्ष करती है, लड़ती है, सहती है। उसकी शक्ति के जाग उठने के कारण गाँव में निहित स्वार्थों के ठेकेदार, धन और सत्ता के लोलुप उसे सहन नहीं कर पाते।

नेताई उसे हत्या के जुर्म में फँसाना चाहता है; पंचायत में आम लोगों तथा चौकीदार और मुरली पंडित के माध्यम से उस पर दुश्चरित्रता, मंदिर अपवित्र करने की ढीठता तथा गुंडागर्दी का आरोप लगवाता है; सिपाही भेजकर उसे किसी न किसी जुर्म में लिप्त कराना चाहता है। सुराजी के आ जाने पर बौखला कर उसे भी अपने हथकण्डे दिखाता है किन्तु किसी में भी वह सफल नहीं हो पाता।

एक रात मैना अपना कठघोड़वा का नाच दिखाती है और उस रात को एक मुसाफिर उसके यहाँ ठहरता है। वह पानी में चूहे मारने वाली दवा मिला देती है। पानी पीने से मुसाफिर मर जाता है, उसकी लाश वह तालाब में फेंक आती है। नेताई इस घटना में उसे पकड़वाना चाहता है, उसके शक के आधार पर सिपाही मैना के घर की तलाशी लेता है। किन्तु मुसाफिर का सामान नेताई से घर में तलाशी में मिलता है। नेताई वह सारा सामान सिपाही के कब्जे से छीनने का प्रयत्न करता है। इस बीच मैना का पुत्र सुरजा लौट आता है। वह गाँव में लोक शक्ति के जागरण का आयोजन करता है, लोगों को राजनैतिक सत्ता के यथार्थ राक्षसी

स्वरूप का परिचय कराना चाहता है जिसकी तीन भुजाएँ हैं पूंजीपति, नौकरशाही, नेता, जमींदार और चौथी भुजा शेष सब। वह शक्ति केन्द्र के त्रिगुट का स्वरूप लोगों को बताता है; गाँव में इस प्रकार अपनी लड़ाई आप लड़ने का साहस लोगों में पैदा करना चाहता है। वह विजयादशमी उत्सव को अपने आयोजन का माध्यम बनाता है। विरोधों के बावजूद, हिंसा का अहिंसा द्वारा सामना करते हुए, वह लोगों में लोक शक्ति के जागरण के प्रयत्न का श्री गणेश कर देता है और लोग इस चतुरभुज राक्षस को पहचान जाते हैं। दलित मैना दलित मानवता का प्रतीक है किन्तु अपने को पहचान जब वह उठ खड़ी होती है वह लोक शक्ति का प्रतीक बन जाती है, सुरजा युवा शक्ति का प्रतीक बन जाता है। गाँवों के टूटने के मूल में भ्रष्ट राजनैतिक सत्ता की होड़, चुनाव बाजी और निहित स्वार्थों की दानव-लीला है। नाटक की विषय वस्तु इस प्रकार ग्राम के सामाजिक-राजनैतिक ढाँचे का विश्लेषण करती है। नाटक की स्थापना है कि सामाजिक अन्याय के बावजूद भी यदि मनुष्य समाज में रहना चाहता है तो इसका कारण यही है कि कहीं वह अपने को दूसरे से, समाज से, बँधा हुआ पाता है; वह उससे भाग कर जा नहीं सकता; कि सभी अन्यायी के मूल में भय है कि समाज की स्थिति ऐसी हो गई है कि अन्याय के लिए कोई एक दोषी न होकर पूरा सामाजिक ढाँचा दोषी है अतः सम्पूर्ण क्रान्ति की आवश्यकता है। कहना न होगा यह विषयवस्तु आधुनिक सन्दर्भों में कितनी सार्थक हो गई है। इसका कथ्य जागरण की प्रेरणा बने, ऐसी कामना को मैं महत्त्वाकांक्षा नहीं कहूँगा।

इस नाटक के प्रूफ पढ़ने और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर की अपेक्षाओं के अनुरूप अभ्यास प्रश्न तैयार करने में श्री मथुराप्रसाद श्रीवास्तव, प्राख्याता, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर ने जो श्रम किया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

—लक्ष्मीनारायण लाल

हिन्दी नाटकः स्वरूप और विकास

स्वरूप :

काव्यों में नाटक को रम्य कहा गया है। रमणीयता इस विधा की अनिवार्यता है। दृश्य भी होने से इसकी प्रभावोत्पादकता अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक है।

नाटक शब्द की व्युत्पत्ति √ नट् से और कुछ √ नृत् से मानते हैं। कुछ समन्वयवादी विचारकों के अनुसार दोनों धातुएँ मूलतः एक हैं और √ नृत् से नाटक शब्द व्युत्पन्न हुआ है।

हिन्दी नाटकों का शिल्प संस्कृत तथा लोकमंच से प्रभावित है। संक्षेप में संस्कृत के नाट्य सिद्धान्तों पर यहाँ विचार करना अप्रासंगिक नहीं होगा।

संस्कृत में नाटक के तीन मूल तत्त्व माने गए हैं—वस्तु, नायक और रस। कथावस्तु के दो प्रकार माने गए हैं: अधिकारिक (आरम्भ से अन्त तक चलने वाली मूल कथा) और प्रासंगिक (जो अधिकारिक कथा के अधीन होती है और उसे फल प्राप्ति की ओर उन्मुख करती है।) कथा की विषयवस्तु प्रख्यात (ऐतिहासिक, पौराणिक एवं प्रसिद्ध) उत्पाद्य (कल्पित) तथा मिश्र हो सकती है। अभिनय की दृष्टि से वस्तु-विन्यास दो प्रकार का होता है: दृश्य, जिसका अभिनय आवश्यक है, और सूच्य, जिसकी केवल सूचना दी जाती है। दृश्य कथावस्तु 'अंकों' में विभाजित होती है जबकि सूच्य कथावस्तु के लिए दृश्यों के बीच विष्कंभक, प्रवेशक आदि का विधान किया जाता है।

वस्तु के अन्तर्गत ही कथोपकथन या सम्वाद पर विचार किया गया है। आधुनिक समीक्षा शास्त्रियों द्वारा बताए गए नाटक के ये तत्त्व— देशकाल और वातावरण, उद्देश्य एवं संकलनत्रय भी इसी के अन्तर्गत विवेच्य माने जा सकते हैं।

'नायक' के अन्तर्गत पात्र और चरित्र-चित्रण को लिया जाता है। 'रस' के अन्तर्गत शेष सभी बातें आ जाती हैं। 'रस' को ही नाटक की आत्मा माना गया है। भाषा शैली, रंग-विधान, अभिनेयता सब रस-सृष्टि में सहायक होते हैं और दर्शक पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

लोकमंच शैली के नाटकों में नौटंकी, लीला, प्रहसन आदि का अयथार्थ मनोरंजनवादी स्वरूप अधिक मुखर रहता है। इनका हास्य फूहड़ भले ही हो किन्तु लोक कथाओं (जिनके पात्र अधिकतर राक्षस, राजकुमार राजकुमारी आदि होते हैं) लोकगीतों, गायन-वादन, मुखौटों के प्रयोग, वेशभूषा वैचित्र्य, नृत्य अभिनय आदि से इनमें दर्शकों को भाव-विह्वल कर देने की शक्ति होती है।

उद्भव और विकास :

भारतेन्दु के पूर्व हिन्दी नाटकों का कोई साहित्यिक, रूप प्राप्त नहीं होता मैथिल कवि विद्यापति, केशवदास, यशवन्त सिंह, विश्वनाथ सिंह आदि की कृतियों को नाटक के केवल एक तत्त्व 'संवाद' की उपस्थिति से नाटक मान लेना विवादास्पद है। भारतेन्दु के पूर्व रासलीला और रामलीला जैसी लोक-नाट्य परम्परा अवश्य चल रही थी। इधर पारसी कम्पनियाँ भी खुल गई थीं जिन्होंने पौराणिक और ऐतिहासिक कथाएँ लेकर लोकनाट्य की परम्परा के साथ भद्दे ढंग से नाटक खेलना शुरू किया था।

हिन्दी नाटकों का आरम्भ गद्य के अविर्भाव से होता है। राष्ट्रीय चेतना के संचार के साथ ही साहित्यकारों का ध्यान नाटकों की ओर

आकर्षित हुआ। धार्मिक अन्ध-विश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों तथा विदेशी शासन के विरुद्ध नाटकों के माध्यम से जितनी सफलता-पूर्वक आवाज उठाई जा सकती है उतना अन्य किसी माध्यम से संभव नहीं।

ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से नाटकों को चार कालों में बाँटा जा सकता है।

1. भारतेन्दु युग
2. द्विवेदी युग
3. प्रसाद युग
4. प्रसादोत्तर युग

1. भारतेन्दु युग :

इस युग के समस्त नाटकों की चेतना है देश प्रेम तथा समाज सुधार। ये नाटक राष्ट्रीय गौरव के प्रति सम्मान और गर्व की भावना जगाते हैं तथा अवरोधक रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों का विरोध करते हैं। नाटकों की कथावस्तु सामान्यत: तत्कालीन जीवन से ली गई। इतिहास और पुराणों की कथाओं को नए सँदर्भ में प्रस्तुत किया गया। भाषा जनसामान्य की है। नाटकों को रंगमंच के अनुकूल बनाने का भी प्रयास किया गया तथा नाट्य रासक, प्रहसन, भाण आदि अनेक शैलियों का प्रयोग किया गया।

भारतेन्दु ने स्वयं तो नाटक लिखे ही, अन्य बहुत सारे लेखकों का भी सहयोग इन्हें मिला, जिन्होंने भारतेन्दु द्वारा आरम्भ की गई प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया। इस युग के प्रमुख नाटककार हैं: राधाकृष्णदास, किशोरीलाल गोस्वामी, श्रीनिवास दास, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' बालकृष्ण भट्ट आदि। इस युग में संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला आदि के बहुत से नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी हुआ।

2. द्विवेदी युग :

इस युग में दो तरह के नाटककार थे :

(i) वे नाटककार जो पारसी थियेट्रिकल कम्पनी के लिए नाटक लिखते

थे—नारायण प्रसाद 'बेताब', आगा हश्र 'कश्मीरी', हरीकृष्ण 'औहर,' तुलसीदास 'शौदा' आदि। पारसी थियेटर में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का श्रेय इन्हें ही है।

(ii) वे नाटककार जो स्वतन्त्र लेखन करते थे—बद्रीनाथ भट्ट, बेचन शर्मा उग्र, जी. पी. श्री वास्तव, राधेश्याम कथावाचक आदि।

विषय की दृष्टि से इस काल के नाटकों को निम्न भागों में रखा जा सकता है : (1) ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय (2) पौराणिक (3) कृष्ण चरित से सम्बद्ध (4) संतचरित से सम्बद्ध (5) प्रेमलीला पूर्ण (6) सामाजिक (7) हास्य-व्यंग्य पूर्ण।

3. प्रसाद युग :

भारतेन्दु युग में हिन्दी नाटकों के जिस रूप का श्री गणेश हुआ था उसका उत्कर्षपूर्ण संस्कार प्रसाद युग के नाटकों में मिलता है। इस युग के नाटकों में भारतीय नाट्य विधान के मंगलाचरण, नान्दी, विदूषक आदि गायब हो जाते हैं। गीत-विधान में परिष्कार किया गया है। रस परिपाक के लिए चारित्रिक अन्तर्द्वन्द्व का सहारा लिया जाता है। सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण भावुकता के सहारे चलता है। विषय वस्तु ऐतिहासिक और सामाजिक होती है तथा वर्तमान की समस्याओं से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रहती है। इनमें भविष्य के प्रति संदेश भी मिलता है। इस युग के नाटकों में यत्रतत्र काव्यात्मकता और दार्शनिकता का पुट मिलता है। मंचन के प्रति इस युग के नाटककारों का, विशेषतः 'प्रसाद' का कोई आग्रह नहीं दिखाई देता। इस युग के नाटक दृश्य की अपेक्षा पाठ्य अधिक हैं। इस युग के प्रमुख नाटककार हैं : प्रसाद, गोविन्द वल्लभ पंत, हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि।

4. प्रसादोत्तर युग :

प्रसाद युग के अनेक नाटककार तथा स्वातन्त्र्योत्तर काल के

नाटककार आज जिस प्रकार के नाटक रच रहे हैं उनमें यथार्थवादी दृष्टि है, उनमें से अधिकांश समस्या नाटक हैं। आदर्शवादी आग्रह के प्रति उनमें तटस्थता है।

परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ विषयवस्तु में भी परिवर्तन आया है। समाजशास्त्रीय दृष्टि उभर रही है। वैयक्तिक सम्बन्धों, सामाजिक बिखराव, गाँवों की टूट, मूल्यों के संकट को लेकर नाटकों की शैली में व्यंग की तीव्रता और प्रतीक-विधान बढ़ रहा है। लोकमंच से जुड़ने की कामना से लोकमंचीय शैली का मिश्रण भी हो रहा है। स्पष्ट है कि आज के नाटक लोकमंच को ध्यान में रखकर लिखे जा रहे हैं और इसलिए वे सरलता से मंचित किए जा सकते हैं। इस दृष्टि से उन्हें रंग-नाट्य भी कहा जा सकता है।

प्रमुख नाटककारों में रांगेय राघव, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल आदि को गिना जा सकता है।

•

चरित्र :

मैना
नेताई
ठाकुर
शाहजी
सहदेव
चौकीदार
रामदास
गजाधर
महतो
सुरजा
नटुआ
गंगा
अन्य : सिपाही, गाँव के लोग, तीन पुरुष एक आदमी.

पहला अंक

पहला दृश्य

(सूने खाली मंच पर नटुआ कमर में ढोल बाँधे गाता-बजाता हुआ आता है।)

नटुआ : गंगा बडी गोदावरी तीरथ बड़ो प्रयाग
महिमा बडी समुंद्र की पाप कटे हरद्वार।
सुनो पंचो सुनो।
सुनो भाई सुनो।
धोओ सीस मिले जगदीश
धोओ नैन मिले सुख चैन
धोओ कान मिले भगवान
धोओ कंठ मिले बैकुंठ।
सुनो पंचो सुनो।
एक नार ने अचरज किया
सांप मारि पिंजड़े मा दिया।

जो जो सांप ताल को खाये
सूखे ताल सांप मरि जाये ।
(गांव के लोग पास घिर आते हैं ।)

पहला आदमी : का है भाई, का है? तू कहां का किस्सा बुझाई रहा है ?

नटुआ : मैना चमाइन की पंचाइत बैठ रही है, ठाकुर के दुआरे पंचों का जमावड़ा है । बड़कवा के दुआरे सच को सच कहो, झूठ को झूठ, राम के सहारे ।
मैना की पंचाइत है
सुनो भाई सुनो ।
सकल पंच सुनो
ऐसी नार गजब की वार
सुखिया का सिर काट लिया
ना मारा ना खून किया ।

दूसरा आदमी : अरे भाई मैना की पंचाइत है सो तो सुना, मगर तू कहि का रहा है लपड़ सपड़ ?

नटुआ : कर बोले कर ही सुने, श्रवन सुनै नहि ताहि
कहै पहेली बीरबल बूझै अकबर साहि ।

पहला आदमी : नाड़ी है नाड़ी ।

नटुआ : नहीं, नारी है नारी ।
कहे पहेली बीरबल सुन लो अकबर साहि
रीधी रहे तो सब चखें बिन रीधे सरि जाहि ।

दूसरा आदमी : यह तो गन्ने का रस है ।

नटुआ : रस रस रस
बस बस बस
सुभाषितेन गीतेन युवती नाच लीलया,
मनो न रम्यते यस्य सः योगी अथवा पशुः ।
(गाता हुआ चला जाता है ।)

(दूसरा दृश्य)

(ठाकुर के दरवाजे पर गांव की पंचायत बैठी है ।)

ठाकुर : पंचो ! सब हाजिर हैं ?

चौकीदार : सब हाजिर हैं साहेब ।

नेताई : कौन कहता था मैना चमाइन नहीं आयेगी इस पंचायत में ?

ठाकुर : मुझे इस बात पर गंभीर आपत्ति है कि मैना को श्रीमती मैना देवी या मुसम्मात मैना न कहकर बार-बार उसे मैना चमाइन कहा जा रहा है ।

नेताई : तो क्या उसे ठाकुराइन कहा जाय ?

गजाधर : ठीक है, मुसम्मात मैना देवी कहा जाय ।

सहदेव : देवी नहीं घंटा कहा जाय ! दुश्चरित्र, आवारा, बदमाश ! जो कभी नहीं हुआ, वह हो रहा है इस गांव में । शूद्र की जात ……

ठाकुर : खबरदार, इस तरह कच्ची जबान यहाँ कोई नहीं बोल सकता । यह पंचायत है । गाँव का खुला अखाड़ा नहीं । मैना हमारे गाँव की स्त्री है । वह बहू है इस गांव की । **(विराम)** चौकीदार, अभियोग क्या है ? रखो पंच के सामने ।

चौकीदार : पहला दावा, मुसम्मात मैना की चाल-चलन और चरित्र को लेकर गाँव में लोगों की शिकायत है । दूसरा दावा, मुरली पंडित का, शंकर जी के शिवाले में घुसकर मैना ने देव-स्थान को अपवित्र किया ।

तीसरा दावा मेरा है कि साहेब, सिर्फ इतनी सी बात कहने पर कि 'फागुन माह में जो कत्ल हुआ, जिसकी लाश तालाब में फेंकी हुई मिली, पुलिस और थाने को शक है कि……'मैना ने उसी शाम, बरनपुर के चार गुंडों को लेकर मेरे घर पर चढ़ाई की।

रामदास : पंचो याद करो, एक घटना इसके पहले इसी गाँव में घटी है। सबको मालूम है, आज से सात साल पहले यहाँ सरजू नदी की बड़की बाढ़ आई थी। तब गाँव-जवार की सारी खेती देव के उस महाकोप में नष्ट हुई। हमारी सारी चमर टोलिया बह-बिलाय गई। यही नेताई बाबू, जिला के कलक्टर साहब, क्षेत्र के एम. पी. को मशीनवाली किस्ती पर बिठाकर लाये थे मुआइना कराने। सरकार की तरफ से अन्न-कपड़ा मिला। मुला आधा अन्न और कपड़ा नेताई बाबू ने बेचकर रख लिया। हरिजनों को घर बनाने के लिए पांच-पांच सौ रुपये प्रति घर बनवाने के लिए सरकार ने दिए। यही शाह जी और नेताई बाबू ने मिलकर हमसे अंगूठा लगवाय लिया, और सारी रकम खुद हजम कर ले गए।

नेताई : बकवास करता है।

शाहजी : भाई, भगवान से तो डरा कर।

रामदास : गरीब दुखिया के भगवान नहीं होते। हां तो पंचो, इस अंधेर खाते के खिलाफ सुराजी मिसिर ने गाँव में अनशन किया। इस गाँव-जवार में भीख मांगकर फिर हमारे लिए घर बनवाये। और जब क्वार-कार्तिक आया तो इसी नेताई ने हमें भड़काया कि मालिक लोगन से अब दुगुना खेत लो, तब हलवाही करो। जमाना बदल गया है, मजदूरी के अब पांच रुपये रोज लो। हम इनके कहने में आइ गए, तभी वह घटना घटी। सबसे पहले दिन दहाड़े मेरे घर में आग लगी, फिर सारी चमर टोलिया के बूढ़े, बच्चे, मरद, स्त्री सबको बेरहमी से पीटा गया।

ठाकुर : वह सब हमें पता है, पर आज की पंचायत जिस मामले को लेकर बैठी है वह कुछ और है।

शाहजी : इन पुरानी बातों से इस नये 'केस' का क्या मतलब ?

रामदास : जड़ में वही पुरानी बातें हैं।

महतो : ये नये दावे तो बिल्कुल बनावटी हैं। मैना शिव के मंदिर में गई, मुरली पंडित का दावा, चौकीदार का 'केस' सब झूठ है। मेरी समझ में नहीं आता जो असली मामला है, वह खुलकर सामने क्यों नहीं आता ?

नेताई : असली मामला आर्थिक है, उसीमें से पैदा होता रहता है शूद्र-सवर्ण की समस्या, चाल-चलन, व्यवहार और चरित्र की समस्या। धर्म-अधर्म की बात उसी अर्थ में से निकलती है। तभी तो अर्थशास्त्र का संबंध क्रांति से है। जब अर्थ को कोई स्वार्थशास्त्र बनाता है तभी वह अनर्थशास्त्र हो जाता है।

ठाकुर : नेताई जी,…… हां तो महतो, बताओ असली बात क्या है ?

(चुप्पी छा जाती है।)

महतो : कहाँ से शुरु करूं मालिक ? क्या बताऊँ ? सब भीतर जाकर न जाने कहाँ छिप जाता है।

नेताई : यही भाषा यह सरकार की अदालत में भी बोलता है तभी कुछ नहीं होता।

महतो : कैसी अदालत ! कैसा दावा ! पानी में रहना और मगर से बैर करना। जब अपने गाँव-घर में ही न्याय नहीं, तो बाहर कहाँ है न्याय ?

नेताई : भूल गये ? मैं तब नहीं खड़ा था तुम लोगों की तरफ से ? सवर्ण लोग हरिजनों पर इतना अत्याचार करें ! मैं खुद नहीं गया था तुम लोगों को लेकर कलक्टर के पास ! पुलिस अफसर,हरिजन कल्याण के डाइरेक्टर यहां आये थे, मैंने बुलवाया था।

रामदास : फायदा भी तो आप ही को हुआ।

नेताई : क्या हुआ ? कोई आकर साबित तो करें, मैंने क्या किया ?

रामदास : कौन साबित कर सकता है !

नेताई : बीपत चौधरी से पूछो। क्यों, तुम्हीं तो तब चौकीदार थे इस गांव के।

चौकीदार : मेरी चौकीदारी से जिस दिन आपने मुझे बर्खास्त करवाया, मैं मान गया झूठ में कितनी ताकत है।

रामदास : हम इनके सहारे मुकदमा लड़ते ? अपने जर जमीन से भी हाथ धोते। यह कहते थे सुराजी पंडित को असली मुद्दई बनाओ। हमसे बयान दिलवाना चाहते थे कि सुराजी मिसिर ने चमरटोलिया में आग लगाई, राम राम राम ....

पहला आदमी : मतलब यह कि असली मुकदमा कभी दायर ही नहीं हुआ।

दूसरा आदमी : इतनी बातें हैं कि बातन से बात बेबात निकलती चली जात हैं।

गजाधर : और असली बात दूर चली जाती है।

सहदेव : पंचायत थी मुसम्मात मैना की, और मैना देवी मजे से चुपचाप पान चबाय रही हैं। और हम फजूल में यहाँ बैठे बकवास सुनि रहे हैं।

ठाकुर : फिर वही कच्ची जबान। यहाँ घटी हर घटना का संबंध हमारे वर्तमान से है। जो कुछ कहीं होता है, उसका प्रभाव तब तक नहीं मिटता, जब तक वह मिटाया नहीं जाता। और यह तब तक संभव नही होता जब तक हर एक आदमी यह महसूस नहीं करता कि सब सबके लिए जिम्मेदार हैं। ध्यान रखिए, यहाँ कोई बात फजूल नहीं हो रही है। सब पर इतना बीता है, सबके दिल इतने भरे हुए हैं कि सब फूटकर बहने लगता है। सोचिए भला, आखिर एक मनुष्य दूसरे के साथ एक गाँव में, एक समाज में क्यों रहना चाहता है--इतनी सारी विपत्तियों, अन्यायों के बावजूद भी क्यों ? आधार वही है, वह एक दूसरे के साथ फिर भी अपनी किसी एकता समानता का अनुभव करता है। जिसे इस अनुभव पर विश्वास नहीं, वह इस पंचायत में बैठने का अधिकारी नहीं है। **(बिराम)** महतो। हम मैना देवी की इस पंचायत में वह असली बात सुनना चाहते हैं।

(बिराम)

महतो : सरजू की उस बाढ़ से सात साल पहले की बात है। गोबरधन की पत्नी मैना, गौने में पहली बार इस गांव में आई। मुश्किल से यही सोलह साल की उमर रही होगी मैना की। अठारह साल का रहा होगा गोबरधन। उसी साल पड़ा वह अकाल। एक बूँद वर्षा नहीं हुई। उसी अकाल में मैना को पूत जनमा।

सुरजा नाम रखा अपने पुत्र का। भयानक महंगाई। शाहजी बैठे हुए हैं, पांच रुपये सेर जौ, चना और मटर के भाव। जिसके पास जो कुछ था चमर टोलिया में, गहना-गुरिया, बर्तन, बैल-गाय-बकरी सब बेचकर खा गए। जब कुछ नहीं बचा और लोग मरने लगे, तब इसी मैना ने अपने इसी गांव के बीचोबीच, सुराजी मिसिर के दरवाजे पर सबके सामने कहा—

मैना : आज सुराजी पंडित जेल में हैं। हमारे लिए अकाल से जूझते हुए सुराजी को इसी नेताई और शाहजी ने मिलकर जेल में डलवा दिया। वह सरकारी गल्ले की दुकान पर धरना दिए बैठे थे। वह सत्याग्रह कर रहे थे—दुर्भिक्ष के खिलाफ।.........यह कैसा गाँव है, जहाँ एक, अन्न के लिए तड़प कर जान देने को है, दूसरा अपने घर में मजे से खा रहा है। ये कैसे लोग हैं, जिन्हें इतनी भी चिंता नहीं कि जो उनके सामने मर रहे हैं, आखिर वे कौन हैं? यह कैसा गाँव है, जहाँ लोग अपनी तरह दूसरों को नहीं देखते?

(विराम)

महतो : तभी एक रात गोबरधन अपनी औरत मैना और अपने बच्चे सुरजा को छोड़कर गाँव से भाग गया अपनी जान बचाने के लिए। पंचों को मालूम है किस तरह अकेली मैना ने अपने बच्चे को पाला। तब वह सुरजा सात साल का था, जब वह सरजू नदी की बड़की बाढ़ आई थी और उसके बाद गाँव में वह घटना घटी थी—आगजनी और मार-पीट की। उसमें मैना का सिर फूटा था, सुरजा के बायें हाथ पर चोट लगी थी।

(मैना रो पड़ती है।)

ठाकुर : उस वक्त मैं गाँव में नहीं था। रो नहीं मैना! धीरज रख।

महतो : सुरजा दस साल का हुआ। एक रात वह भी अपनी मां को छोड़कर चला गया। और तबसे अकेली रह गयी मैना इस गाँव में। वह जिसके घर कुटाई पिसाई की मजदूरी करने आती, वह उसे बुरी नजर से देखता। जिसकी खेती-बारी में मजदूरी करने जाती, वहीं उसे कोई न कोई बदमाश मिलता। मैना जवान है, सुन्दर है, सच्चरित्र है, यही है उसका अपराध। यह अपनी गरीबी में, विपत्तियों में ईमानदारी और आत्मसम्मान की जिंदगी जीना चाहती है, यही है उसका पाप। जो लोग मैना की पंचायत बुलाकर यह साबित करना चाहते हैं कि मैना दुश्चरित्र है, बदमाश है आवारा है, यह उन्हीं का पाप है।

सहदेव : महतो मैना की कमाई खाते हैं, तभी उसकी वकालत करने आये हैं। मेरे पास सबूत है—मैना अपने घर में रात को लोगों को टिकाती है और उनसे अपना धंधा करती है। मैं पूछता हूँ, मैना के पास आजकल इतना धन कहां से आया, जो इतने ठाट से रहती है।

शाहजी : ऐसे-ऐसे कीमती कपड़े, सोने के गहने पहनती है। साईकल पर चढ़कर चलती है।

नेताई : इतने घमंड में रहती है, कि पूछो नहीं।

ठाकुर : मैं पूछता हूँ आप लोगों के पास इतना धन कहां से आया? हमारी बहू-बेटियां सोने के गहने पहनती हैं। आप सब लोग साइकिल पर चढ़ते हैं। आप लोगों में इतना घमंड कहां से आया कि अपने सामने किसी को

बर्दाश्त तक नहीं कर सकते ?

शाहजी : हमारा बाप दादों से चला आ रहा है ।

सहदेव : हमारी बराबरी यह शूद्र औरत करे । इसकी इतनी हिम्मत ?

नेताई : हमारे अपने साधन हैं । इसके पास क्या है ? कहां से अचानक आया इतना धन""""यह घमंड ?

ठाकुर : तो पंचो, असली दावा यह है । इसे आप लोग सीधे कहते । इतने सारे झूठे अभियोग लगाने की क्या जरूरत थी ?

महतो : जहां सब कुछ झूठ, बेइमानी, प्रपंच, अन्याय पर खड़ा है, वहां सीधी बात कहने की हिम्मत कहां ?

ठाकुर : मैना ! अब तुझे जवाब देना है । तुम निर्भय, निः संकोच बयान दो ।

सहदेव : हुअ ! इसे किस बात का भय और संकोच !

ठाकुर : तुम बहादुर स्त्री हो । यहां हर ईमानदार इंसान को अपनी सच्चाई का सबूत देना पड़ता है ।

(इसी समय धवल वस्त्रों में तीन पुरुष प्रगट होते हैं । मैना अपने आंचल से पृथ्वी को स्पर्श कर प्रणाम करती है । पंचायत के लोग आपस में बातें करने लगते हैं । तीनों पुरुष एक पंक्ति में दर्शकों के सामने खड़े होकर एक स्वर में कहते हैं ।)

तीनों पुरुष : नीलकंठ तुम नीले रहना
मेरी बात राम से कहना
सोते हों तो जगा के कहना
जागते हों तो कान में कहना ।

(तीनों परिक्रमा करते हुए एक किनारे बैठ जाते हैं ।)

मैना : दुहाई देवतन की । दुहाई हो पंच परमेश्वर की । जिस रात हमें अकेला छोड़कर मेरा पति चला गया, उस सुबह मुझे पता चला, गरीबी और अज्ञान का अर्थ क्या होता है । मेरी मां के घर एक गुरुबाबा आया करते थे, तब मेरा गौना नहीं हुआ था । गुरुबाबा बोले थे—ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय । मेरी मां रोने लगी थी । मां विधवा थी । मैं ही एक अकेली संतान थी ।

(विराम)

जिस दिन मेरा पूत सुरजा भी मुझे छोड़कर चला गया, कितनी रातें नींद नहीं आई । अन्न पानी सब छूट गया । तभी मुझे एक दिन अपनी उसी मां का आंसू भरा मुख और वही गुरुबाबा का चेहरा याद आया । मुझे लगा—यह जीवन खुद के लिए समझना होगा । मैं दुखी हूँ । क्योंकि मैं डरी हुई हूँ । मेरे हृदय में प्रेम नहीं है""ढाई आखर प्रेम का"" वह प्रेम तभी जगता है जब हमारे बीच में कोई दीवार नहीं रहती, पर मैं तो हर छन डरी रहती । हर चीज से भयभीत"" ।

[रो पड़ती है । पंचायत के सारे लोग उठकर चले जाते हैं । वे तीनों पुरुष चलकर दूसरी ओर बैठ जाते हैं ।]

मैना : मुझे तब तक यह पता नहीं था कि हमारे इस समाज में मेहनत और परिश्रम भी पाप माना जाता है । और उसकी सजा दी जाती है । तब मुझे पता चला—सिर्फ डरी मैं ही नहीं हूं, सारे लोग भयभीत हैं । मैं अपने

भय को समझने लगी। उसे पकड़कर देखना शुरू किया। सड़क पर चाय की दुकान थी। गाँव वाले, आने-जाने वाले मुसाफिरों को बताते थे, 'यह शूद्र है। यह जात की चमारन है। यह अछूत की चाय दुकान है।' जो ऐसा कहते, वही चुपचाप मेरे हाथ की चाय पी जाते। 'मैना, तेरी चाय कितनी अच्छी है रे। अरे, क्या अमृत डालती है इसमें? एक दिन शाम को दिन डूबते डूबते, नेताई, सहदेव और शाहजी का बड़ा लड़का, सबने मुझे घेर लिया। उस दिन सब कुछ खत्म हो जाने वाला था मेरा। मैंने बहुत गुहार मचाई, पैरों गिरी, चीखी, गिड़गिड़ाई⋯⋯कुछ नहीं⋯⋯कुछ भी नहीं। फिर मैंने यह बांक उठा ली⋯⋯। उस समय देखा, दूसरा कितना डरपोक है। कितना कायर। (**विराम**) चाय की दुकान तोड़ दी। एक रात⋯⋯एक रात⋯⋯।

(**तीनों पुरुष दर्शकों के सामने आते हैं।**)

पहला पुरुष : किससे डरना? क्यों, किसलिए डरना? डरने से कुछ नहीं होता। कैसे होगा भला?

दूसरा पुरुष : तू इतना घबड़ाती है! रास्ता अच्छा नहीं है इसलिए? पर जाना है न!

तीसरा पुरुष : तुझे नींद नहीं आई, नहीं, ऐसा तो नहीं। जो सोचती है, वह यथार्थ नहीं है। वह तो स्मृति है। जो नहीं है, वह कहाँ है?

पहला पुरुष : संकट बताने में नहीं है। अभिव्यक्ति में है। क्योंकि वहीं भय है।

दूसरा पुरुष : है नहीं। लगता है।

(**तीनों पुरुष चलकर एकांत में खड़े हो जाते हैं।**)

मैना : उस रात अचानक मेरे घर में एक मुसाफिर आया। मैंने उसे भोजन बनाकर खिलाया। वह मुझे भोजन के रुपये देने लगा। मैंने कहा, यह सराय नहीं, घर है। वह बोला, कैसा घर जहां कोई और नहीं है? उसने कहा—आज रात मैं इसे घर बनाऊँगा। मुझे अच्छा लगा—देखूँ तो, घर क्या होता है। वह बाहर सोया। मैं भीतर सोई। आधी रात गए, उसने पानी के लिए पुकारा। जैसे ही दरवाजा खोलकर पानी देने चली, उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। बहुत बुरा लगा। सारा गुस्सा भीतर ही पीने लगी। उसे आंगन में ले आयी चुपचाप। उसी बांक से उसका गला काट⋯⋯। लाश को तालाब में फेंककर घर लौटी, तब पूरब दिशा में शुक्र भगवान उदित हो रहे थे। मुसाफिर के उस छोटे से बक्से को खोलकर देखा—उसमें दो हजार रुपये⋯⋯ कपड़े⋯⋯। सब रख लिए मैंने। वह मेरी कमाई थी। इसकी चिंता नहीं रह गई थी मुझे, कोई क्या कहेगा। कहने वाली मैं थी। मैं ही थी करने वाली।

पहला पुरुष : मैंने चोरी करने का विचार किया। अब मैं सबसे पहले प्रार्थना करता हूं कि हे भगवान, रात अँधेरी हो या आकाश में बादल घिर जायँ।

दूसरा पुरुष : जब मैं साहूकार के घर पहुंचता हूँ तो चाहता हूँ कि दीवाल इतनी कमजोर हो कि एक लात मारते ही टूट जाय। भीतर जाकर चाहता हूँ कि तिजोरी का ताला ऐसा हो कि एक झटके से खुल जाय।

तीसरा पुरुष : उसके घर के लोगों को ऐसी नींद लगे कि वे बेहोश पड़े रहें।

पहला पुरुष : चोरी का माल लेकर जब मैं घर पहुँचूँ तो आसमान

साफ हो जाये। मेरे मकान की दीवारें इतनी मजबूत हों कि एटमबम से भी न टूटें। मेरी किसी चीज को कोई हाथ नहीं लगा सके।

(तीनों उसी क्षण चुप हो जाते हैं, जैसे ही कोई और बोलने चलता है)

मैना : मैं नहीं मानती, स्वार्थ से सारा दृष्टिकोण बदल जाता है।

ठाकुर : यहाँ जितना कुछ मैंने सुना, देखा और जाना उससे लगा मनुष्य का स्वार्थ परस्पर विरोधी हो सकता है, पर उसके हित में कभी विरोध नहीं हो सकता। जिन लोगों ने यहाँ आज तक यह सिखाया कि एक का संकट दूसरे का सुयोग है और एक की मृत्यु दूसरे का जीवन है, उन्होंने कुछ नहीं समझा।

तीसरा दृश्य

(मैना के घर का दरवाजा। सुबह का वक्त। मैना दरवाजे पर झाड़ू दे रही है। पुलिस सिपाही चौकीदार के साथ आता है।)

मैना : राम राम सिपाही साहेब। आज इतने सबेरे।

(अंदर जाती है)

सिपाही : अगर इस केस की असलियत का पता क्या, कुछ सुराग ही लगा दो तो तुम्हें फिर से चौकीदारी की नौकरी मिल जायेगी।

चौकीदार : अरे अब क्या रखा है चौकीदारी में! नेताई बाबू की सेवा करता हूँ, चाय पानी का इंतजाम हो जाता है।

(मैना पानी लाकर दरवाजे पर छिड़काव करती है।)

सिपाही : अरे, कुछ चाय-शाय पिलायेगी कि सुबह ही सुबह स्नान।

चौकीदार : कहीं कुछ बैठने का प्रबंध नहीं है। सही है, यहाँ बैठने वाला ही कौन है ?

सिपाही : नेताई साहेब के क्या हाल चाल हैं ?

चौकीदार : मौज में हैं।

सिपाही : शाहजी का कारोबार, लेन-देन, दर-दुकान ?

चौकीदार : इन दिनों कुछ मंदी चल रही है। शाहजी के लड़के अच्छे नहीं निकले।

सिपाही : अरे चाय नहीं बन रही है रे !

मैना : पानी चढ़ा आई हूं सिपाही जी ।

सिपाही : ना ना ना । सिपाही जी नहीं, दीवानजी भी नहीं । हाकिम सरकार भी नहीं । बस एक बार कह दो, सिपहिया प्यारे ।

मैना : भूले रहो सिपहिया प्यारे ।

सिपाही : वाह ! जियो मैना ।

(मैना अंदर जाती है ।)

सिपाही : **(चारपाई गिराकर बैठ जाता है और मजे से गाने लगता है ।)**

लश्कर भई कूँच उठ रे सिपहिया प्यारे ।
चहुं दिसि बाजा बाजन लागे
लाल निशान पहुंचि गै आगे
नौबत बाजै दूरि, उठि रे सिपहिया प्यारे ···
लश्कर भई कूँच उठ रे सिपहिया प्यारे ।

(मैना दो गिलास में चाय लाती है ।)

सिपाही : **(लेकर)** ले तू भी पी न । मुफ्त का माल है ।

चौकीदार : मैं चाय नहीं पीता ।

मैना : मेरे हाथ की···· ।

सिपाही : क्यों रे ! मैं ब्राह्मण होकर इसके हाथ की पी रहा हूं, तू कुरमी की जात ··· मारूंगा वह हाथ कि तबियत दुरुस्त हो जायेगी । ले । पी । लेता है कि नहीं । **(डर के मारे ले लेता है)** लगा मुँह में । लगाता है या नहीं । घूंट, गले के अंदर घूंट !

चौकीदार छी छी, आज मुझे बेधरम कर दिया ।

सिपाही : अरे तेरा धर्म इतना हल्का है रे !

मैना : गंगा जल पी लेना इसके बाद···· ।

सिपाही : शहर में जाकर चाय पीयेगा ।

चौकीदार : वहाँ कौन जानता है कौन क्या है ?

सिपाही : अच्छा बेटा, तो ज्ञान ही अधर्म का मूल है ।

चौकीदार : और क्या, जो जाने नहीं, वह माने नहीं ।

सिपाही : अँगूठा छाप !

चौकीदार : जी सरकार !

(विराम)

सिपाही : अच्छा मैना, तुमको थानेदार साहब ने थाने पर बुलाया है ।

मैना : बहुत अच्छी बात है । कागज दिखाओ ।

सिपाही : जबानी हुकुम दिया मुझको ।

मैना : मैं ऐसा हुकुम नहीं मानती ।

(चाय पीने लगता है ।)

सिपाही : मैना ! मुझे तेरे बारे में रिपोर्ट तैयार करके थाने में देना है ।

मैना : जरूर दीजिए ।

(चाय खत्म करता है ।)

सिपाही : तेरी रोजी का जरिया क्या है ?

मैना : मेहनत-मजदूरी ।

सिपाही : **(लिखता है)** सही-सही बता, वरना घर में तलाशी लूँगा—तेरी इतनी आमदनी का जरिया क्या है ?

मैना : पहले मजदूरी करती थी । फिर चाय की दुकान चलाई । अब एक नाच करती-कराती हूं–'कठघोड़वा' ।

सिपाही : अयँ, यह कठघोड़ा की नाच क्या होती है ?

मैना : काठ के घोड़े पर मिर्जा साहब बैठकर आते हैं। उन्हीं का यह खेल है।

चौकीदार : कितनी कमाई हो जाती है ?

मैना : सौ सवा सौ रुपये एक खेल का। या जैसा असामी मिल जाय।

चौकीदार : ब्याह शादी में बुलाते हैं लोग। सरकार की तरफ से भी यह खेल करती है।

मैना : कभी आप भी देखने आइये।

चौकीदार : अरे हुजूर, मैना के नाम से जनता खेल देखने दौड़ती है।

सिपाही : कितने लोग हैं उस खेल में तेरे साथ ?

मैना : यही तीन चार लोग। जैसा मौका पड़ा, उसी के हिसाब से खेल हुआ।

सिपाही : इस खेल में क्या दिखाती हो ?

मैना : यही, अपनी गाँव की जिन्दगी। लोग कितने अंध-विश्वासी हैं ! विद्या और ज्ञान को भी जो लोग छूत मनाते हैं ! अभी सुना नहीं चौकीदार साहब का विश्वास—ज्ञान ही इनके विचार से अधर्म का मूल है।

(विराम)

सिपाही : थाने को रिपोर्ट मिली है कि तेरी चाल-चलन अच्छी नहीं है। गाँव के लोगों पर तेरे चरित्र का बुरा असर पड़ रहा है।

मैना : ऐसा कहने वालों का अपना कोई चरित्र है क्या ?

सिपाही : ओहो, मैंने एक बात कही।

मैना : मैंने भी एक बात कही।

सिपाही : गाँव के कुछ लोगों से तेरी इतनी दुश्मनी क्यों है ?

मैना : यह उन्हीं से जाकर पूछिए।

सिपाही : उनके जवाब मेरे पास हैं। तुझसे पूछता हूँ।

मैना : हर जगह एक राक्षस होता है।

सिपाही : मैं समझा नहीं।

मैना : मैं इसे समझा भी नहीं सकती। लोगों को देखना समझना चाहिए। एक यही चौकीदार को ही लीजिए। इस गाँव के नेताई पांडे से मिलकर मुझ पर झूठे इल्जाम लगाते हैं।

चौकीदार : यह झूठ है।

मैना : खाओ कसम। मैं रामायण की पोथी लाती हूँ। **(लाती है)** इसे हाथ में लेकर कहो—गाँव की पंचायत में जो मुझ पर दावा किया, क्या वह सच है ?

चौकीदार : हाँ, बिल्कुल सच है।

मैना : यह पोथी हाथ में लेते क्यों नहीं ?

चौकीदार : शूद्र चमारन के घर का रामायण मैं नहीं छूता।

सिपाही : वह: बेटा ! शूद्र के घर का रामायण भी अछूत हो गया। पकड़ रामायण। ले हाथ में। लेता है नहीं !

(डर के मारे रामायण पोथी हाथ में लेता है)

सिपाही : बोल ! बोल अब !

चौकीदार : दुहाई नेताई की ! दुहाई""""दुहाई पंचों !

(नेताई दौड़े आते हैं।)

नेताई : क्या है ? यह क्या तमाशा है ?

चौकीदार : दुहाई सरकार की। मैना मेरा धर्म लूट रही है।

सिपाही : झूठा बदमाश !

(**नेताई चौकीदार को अलग ले जाकर बातें करता है ।**)

नेताई : देखिए सिपाही साहब, मैंने आपको यहाँ किसलिए भेजा था और यहाँ यह क्या करने लगे ?

सिपाही : रिपोर्ट तैयार कर रहा हूँ ।

नेताई : चौकीदार आपकी मदद करने आया था और आप उल्टे मैना के मददगार होने लगे । आप आये थे उस हत्या-खून का पता लगाने, जिसकी लाश गाँव के तालाब में मिली ।

सिपाही : वह केस तो कबका फाइल कर दिया गया साहब । मैं तो यह बयान ले रहा था कि इसकी आमदनी का जरिया क्या है ।

नेताई : इसके घर की तलाशी ली ?

मैना : किसकी हिम्मत है मेरे घर की तलाशी लेने की ।

नेताई : क्यों ?

मैना : तलाशी लेने के लिए सरकार का आर्डर ले आइये नेताई बाबू । आप तो इतने बड़े नेता हैं इस गाँव-जवार के । सुना है इस देश की आजादी की लड़ाई में आपने कोई हिस्सा लिया था । शायद जेल भी गये थे ।

सिपाही : मैंने देखा है, इनके जेल जाने का तो कोई रिकार्ड नहीं है थाने में ।

मैना : फिर सरकार से पैन्शन कैसे मिलती है ?………आजादी के सिपाही की पैन्शन ।

नेताई : बन्द कर अपनी जबान ।

मैना : अजी, यह जबान अब तो एक ही बार बन्द होगी ।

नेताई : सिपाही, इसे पकड़ कर ले चलो थाने ।

सिपाही : इसके लिए आर्डर चाहिए हाकिम का ।

नेताई : मैं देता हूँ आर्डर । अगर तुमने मेरे आर्डर की हुक्म-अदूली की तो मैं एस. पी. से रिपोर्ट करूँगा । थानेदार समेत तुम्हें मुअत्तल कराऊँगा । तुम्हें अन्दाज नहीं है मेरी ताकत का । मैं गाँव से जिला, जिला से कमिश्नरी और कमिश्नरी से सूबे की राजधानी तक पहुँच रखता हूँ । मेरे हाथ में अखबार है । मेरी ताकत का पता नहीं है तुम्हें ।

सिपाही : जै हिन्द साहब !

(**सलूट मारकर चुपचाप चला जाता है ।**)

नेताई : मैना, मैं अभी तक चुप रहा । तुझे इस गाँव में रहना है या नहीं ?

मैना : रहना है । और यहीं मरना है ।

नेताई : मैं रहने की बात पूछ रहा हूँ ।

मैना : मैं मरने तक का जवाब दे रही हूँ ।

नेताई : जानती भी है मरना क्या होता है ?

मैना : सिर्फ वही जानती हूँ । मरना ही जीना है । तुम मुझे डरा नहीं सकते । मैं जानती हूँ तुम क्या हो, मैं क्या हूँ । मैं अकेली हूँ, यही जानकर मुझे हरवक्त डराना-धमकाना चाहते हो । पर अकेले को क्या डर ? दूसरा हो तो डर लगे ? बोलो, कोई दूसरा तो यहाँ नहीं है । डर कर जो यहाँ से भाग गया वह मेरा पति था । जो मुझे छोड़कर चला गया, वह मेरा एकलौता पुत्र था । उन्हें डराकर भगा दिया, तूने, तुम्हारे पापों ने । मैं इतनी कायर नहीं । कायर तुम हो । झूठे हो, डरावने राक्षस हो । मेरे देवतन साक्षी है, तुम्हारी

राक्षसी छाया है गाँव की इस धरती पर। कायरता के हाथ में हथियार है, पर शक्ति नहीं है तुम्हारे पास।

(वही तीनों पुरुष प्रगट होकर खड़े हैं गोलाई में)

मैना : शक्ति मेरे भीतर है। मेरे सामने खड़ी है वह शक्ति। तुम्हें उसका आभास तक नहीं है। वह है, जहाँ परायेपन की भावना नहीं है। जहाँ दूसरा अपना है।

नेताई : तू पागल तो नहीं हो गई ?

मैना : हाँ, हाँ, मैना पागल हो गई है। एक ओर राक्षस खड़ा है··· कायर राक्षस। दूसरी ओर उसके देवतन खड़े हैं। बीच में वह पागल शक्ति खड़ी है, जिसके पास केवल दो भुजायें हैं। एक भुजा को उसके पति ने मरोड़ दिया, दूसरी भुजा उसके पुत्र ने।

(रो पड़ती है।)

पहला पुरुष : रोओ नहीं। सम्हालो इन आंसुओं को।

दूसरा पुरुष : संसार की निर्बलतम वस्तु संसार की कठोरतम वस्तु से टकराती है।

तीसरा पुरुष : यहाँ ऐसी कोई और वस्तु नहीं जो जल से अधिक कोमल और निर्मल हो, किन्तु कितनी भी कठोर, मजबूत वस्तु पर आक्रमण करने में इससे बढ़कर और कोई नहीं।

पहला पुरुष : जल अपना मार्ग खुद ढूँढ़ लेता है।

दूसरा पुरुष : उसे कहीं जाना होता है।

तीसरा पुरुष : इसका प्रवेश हर पदार्थ में है।

पहला पुरुष : अभाव के कारण जल सुगम है।

दूसरा पुरुष : कोमल के कारण जल पवित्र है।

तीसरा पुरुष : निर्बल के कारण जल थकता नहीं। ············ उसका सर्वत्र प्रवेश है। ·· वह पथिक है।

जल खुद अपना पथ ढूँढ लेता है।

नेताई : मैं तुमसे समझौता करना चाहता हूँ।

मैना : किस आधार से ?

नेताई : तुम मेरे अपने गाँव की हो।

मैना : पर मैं शूद्र हूँ।

नेताई : मैंने इस गाँव में अछूत आंदोलन किया। सारे मनुष्य समान हैं।

मैना : पर हम समान नहीं हैं।

नेताई : तुम्हारे दुख को मैं जानता हूँ।

मैना : पर मैं अबला नहीं हूँ।

नेताई : मैं वचन देता हूँ।

मैना : तुम्हारे वचन का कोई मूल्य है क्या ?

नेताई : तुम मुझे अपना समझ सकती हो।

मैना : तुम क्या हो ?

नेताई : तुम जानती हो।

मैना : यही तो, यही तो ·······मैं तुम्हें जानती हूं। पर मेरे पति ने तुम्हें नहीं जाना। मेरे पुत्र के लिए तुम्हारे गांव में जगह नहीं थी। अब मैं तुम्हें अपना समझूं ! तुम हमें अपना समझो, यह तुम्हारी जिम्मेदारी नहीं। जिम्मेदारी हमेशा छोटों की ही होती है, क्यों ?

नेताई : अपने को समझती क्या हो ?

मैना : जो हूँ।

नेताई : क्या हो ?

मैना : कुछ नहीं। यही है मेरी शक्ति। यही हूँ मैं। मेरे काठ के घोड़े का खेल देखा है ? वह काठ का घोड़ा जड़ है,

उस पर बैठा है एक बीता हुआ जमाना। और मैं उसी के सामने नाचती हूँ। गाती हूँ। वह खेल खेलती हूँ अपने उसी पति के लिए। वह खेल दिखाती हूँ अपने उसी पुत्र को।

नेताई : कहाँ हैं तेरे पति और पुत्र ?

मैना : कहाँ नहीं हैं ?

नेताई : पर कहाँ हैं ?

मैना : जहाँ इतना डर है, इतना अंधविश्वास, जड़ता है, गरीबी है, वहीं हैं मेरे पति और पुत्र।

नेताई : यह पागल है।

चौकीदार : इसका सिर फिर गया है।

नेताई : बदमाश है। इसका दिमाग सही करना है।

(**दोनों चले जाते हैं**।)

पहला पुरुष : सर्वोत्तम गुण जल की भांति है। जल का गुण सबको, बिना किसी प्रयत्न के, स्वार्थ के, लाभान्वित करने में है।

दूसरा पुरुष : जल निम्नतम स्थान में रहता है, जिससे सब लोग घृणा करते हैं।

तीसरा पुरुष : पर हर जल के नीचे वही पृथ्वी है, जिसे हम माँ कहते हैं।

चौथा दृश्य

(सुराजी पंडित का दरवाजा। दरवाजे पर गाँव के कई लोग बैठे हैं। मैना भी है, महतो और गजाधर भी। सुराजी की उमर पैंसठ साल से कम नहीं है। सबके बीच जमीन पर ही बैठे हैं।)

महतो : महराज, आपने और गाँवों में, और जगह इतना सब कुछ किया, पर अपने इस गाँव में····?

सुराजी : वह कहावत क्या है। अपने गाँव का जोगड़ा और गाँव का सिद्ध ·······।

(हँसने लगते हैं—उन्मुक्त भाव से)

गजाधर : इस बार बहुत दिन लगाकर आए, कहीं दूर निकल गये थे क्या ?

सुराजी : ना, एक गाँव में जाकर बैठा रहा। सरजू पर फैजाबाद जिला का था कोई गाँव। मैं पैदल जा रहा था। अचानक देखा क्या, एक गाँव में लाउडस्पीकर पर कोई नेता जी उचक-उचककर दे रहे थे भाषण। हर एक मिनट के बाद कहते, 'गाँव का विकास करो। भाइयो, गाँव का विकास करो।' मुझसे नहीं रहा गया। भीड़ में खड़ा होकर पूछा—कहाँ है वह गाँव ? जब वह चीज ही नहीं है तो उसका विकास कैसे हो ? नेता ने कहा—यह कहाँ का बेवकूफ है ! इसे गाँव नहीं दिखाई देता ? यह गाँव नहीं है ? मैंने कहा—जिसे गाँव कहा जाता है, वह एक जंगल है। जंगल में जानवर रहता है, गाँव

में नामधारी प्राणी रहता है। दोनों के चरित्र और पराक्रम में कोई फर्क नहीं। जंगल में जो जानवर होते हैं, वे अपना अपना ही सोचते हैं। जंगल में जो कुछ साधन होते हैं, उन्हें अकेले अकेले नोचते हैं और एक दूसरे को खाते हैं। एक दूसरे से और कोई संबंध नहीं। यही दशा गाँव की है। किसी से आज कोई नाता नहीं। अगर है भी तो अपनी जिन्दगी को कायम रखने के लिए, एक दूसरे को लूटने खाने में। जब तक समाज नहीं, परस्पर सहकार का संबंध नहीं, तब तक गाँव एक जंगल है—ब्राह्मण टोला अलग, ठाकुर टोला अलग, शूद्र हरिजन टोला अलग। और इन टोलों में भी फिर बँट-वारा ·······। नेता ने हुकम दिया इस पागल आदमी को यहाँ से बाहर निकाल दो, जैसे अपने ही गाँव के नेताई मेरे लिए कहते हैं। कुछ लोग बढ़े मुझे दबोचकर बाहर निकाल देने के लिए। पर गाँव के कुछ लोगों ने इसका विरोध किया। और मैं उसी गाँव में टिक गया।

मैना : क्या क्या किया उस गाँव में बाबा ?

सुराजी : पहले बेटी, यह बता, तू कैसे है ?

मैना : आपके आशीर्वाद से अच्छी हूँ।

सुराजी : अरे तेरे आशीर्वाद से तो मैं अच्छ हूँ।

(बढ़कर मैना के चरण छूना चाहते हैं, मैना भागती है।)

मैना : नहीं बाबा, ऐसा नहीं। ऐसा नहीं।

सुराजी : उस गाँव में, हाँ परतापपुर नाम है उस गाँव का। वहाँ मैंने देखा–हर घर में अलग अलग चूल्हे जले हैं। रिश्ता है अगर कोई तो आपस में मारपीट और गाली गलौज का।

महतो : सब गाँव की यही कथा है महाराज।

गजाधर : ठाकुर के दरवाजे पर मैना की पंचायत बुलाई थी नेताई और शाहजी ने गांव वालों को उकसाकर।

महतो : मुरली पंडित, सहदेव चौकीदार ने मैना पर झूठे दावे किये।

एक आदमी : नेताई की बैठक में न जाने कहाँ कहाँ के गुंडे-बदमाश, आकर टिके रहते हैं।

दूसरा आदमी : शाहजी ने एक दुकान थाना बाजार में खोली है। थानेदार के यहाँ शाहजी का आना जाना बढ़ा है।

महतो : शाहजी कहते हैं, अब आवे कोई मेरे सामने।

गजाधर : तालाब में उसी लाश वाली घटना को नेताई फिर उठा रहे हैं। खुले आम कहते हैं—मैना मेरे पैरों गिरे, नहीं तो सात साल की जेल, दफा तीन सौ दो साबित होकर रहेगा।

सुराजी : देखो मैना कितनी चुप है ! यही बात मुझे सबसे ज्यादा पसंद है इसमें। यह बोलती है, पर शिकायत नहीं करती। यह बहादुर है, दया नहीं चाहती।

महतो : यह बात तो है साहेब। कितना सहा है, कितना लड़ा है इसने !

सुराजी : इसी के चरित्र से मैंने जाना-श्रेष्ठ मानवता सक्रिय रहती है, पर उसका कोई स्वार्थ नहीं रहता।

मैना : बाबा, यह बात सिर्फ आप पर लागू है। श्रेष्ठ गुण कभी अपने गुण का दावा नहीं करता। वह वही दूसरे में भी देखता है।

सुराजी : (सहसा) अरे नेताई, कहाँ इतने दौड़े जा रहे हो ?

नेताई : (आकर) फिर लौट आए ? सुना था सन्यासी होकर इस गाँव से विदा हो गए।

सुराजी : आवो आवो .... बैठो। थोड़ा शांत हो लो।

नेताई : शांति की जरूरत तुम्हें है, तुम जैसे पाखंडी को। इन्हें है, जो तुम्हें गिद्ध की तरह घेर कर बैठे हैं।

सुराजी : अरे रे रे ! इतने गुस्से में ! पहले तो तुम इतना कठोर नहीं बोलते थे। क्या हो गया इस बीच ?

नेताई : अपने झूठे गांधीवाद का जो बीज बोया था यहाँ, वह अब दिख रहा है।

सुराजी : सुनो सुनो ! जो झूठा था वह क्योंकर दिख रहा है ? और यह गांधीवाद क्या चीज है ? ऐसा तो मैं कुछ नहीं जानता।

नेताई : सत्य ही ईश्वर है। क्या है तुम्हारा सत्य ?

सुराजी : वही तो ढूँढ़ रहा हूँ। सच, विश्वास करो नेताई, मैं नहीं जानता क्या है वह सत्य !

नेताई : जिसका सत्य ईश्वर था, वह चला गया।

सुराजी : भाई तुम इतने आवेश में क्यों हो ?

नेताई : तुम मेरे खिलाफ, मेरी पार्टी के खिलाफ जहर उगलते हो, कभी सोचा है इसका अंजाम ?

सुराजी : सोचा ही नहीं भोग रहा हूँ उसका अंजाम। सन् सैंतालीस के बाद सात बार जेल भिजवाया तुमने। मेरी जमीन नीलाम करा दी। पांच बीघे खेत जो मैंने यहां भूमिहीन हरिजनों के बीच बाँटी, उसे शाहजी से मिलकर तुमने गिरवी करा ली। मुझे अपने ही गाँव में अपनी ही जन्मभूमि में देखना तुम सह नहीं सकते, क्या यह मेरा सत्य नहीं ?

नेताई : यह तुम्हारा झूठा प्रचार है।

सुराजी : ईश्वर तुम्हें शांति दे।

नेताई : मुझे तुम्हारे झूठे ईश्वर पर विश्वास नहीं।

सुराजी : मुझे तुम्हारे ईश्वर पर विश्वास है।

नेताई : सुना था, संन्यास लेकर इस गाँव से चले गए।

सुराजी : सन्यास लेकर गाँव वापस लौटा हूँ। अब यहां से कभी बाहर नहीं जाऊँगा।

नेताई : फिर तो गाँव पूरा बरबाद होकर रहेगा।

सुराजी : अगर गाँव नहीं रहा तो देश नहीं रहेगा।

नेताई : यही है तुम्हारा झूठा गांधीवाद।

सुराजी : गांधी का नाम मत लो। मुझे झूठा कहो। जो चाहो करो मेरा।

नेताई : गांधी महान पुरुष थे। वह राष्ट्रपिता थे।

सुराजी : यही कहकर तुमने अपनी पार्टी बनाई। यही रटकर तुमने मनुष्य को मनुष्यता से गिराकर 'वोटर' बनाया।

नेताई : यही झूठा प्रचार किया तुमने गाँवों में। इन मूर्खों में यही भ्रम फैलाया कि हम पार्टी वाले प्रजातंत्र के दुश्मन हैं। जबकि हम ग्राम-स्वराज्य के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं।

सुराजी : इनकी तरफ से तुम अकेले क्यों लड़ रहे हो ? स्वराज्य इन्हें मिलेगा, इन्हें क्यों नहीं लड़ने देते ? इनकी लड़ाई तुम क्यों लड़ते हो ?

नेताई : इनमें दम है जो लड़ाई लड़ेंगे ?

सुराजी : तुम में है ! वही देख रहे हैं हम। रोटी बड़ी चीज है।

भात का दाना छोटा होता है । रोटी को टुकड़े-टुकड़े कर देने से वह भात नहीं होगा । उसी तरह से तुम्हारी जो राजनीति है, उसकी जो सत्ता है, उसी से गाँव टूटे हैं । ग्राम-स्वराज्य के नाम से गाँवों में आग लगी है । जब-जब चुनाव होते हैं, दूर-दूर से पार्टियों के उम्मीदवार आते हैं । उस समय यहाँ दलगत, जातिगत विभेद और विद्वेष का निर्माण होता है और वही इन गाँवों में आकर जातिभेद के साथ पुराने व्यक्तिगत बिरादरी भेद में मिलकर और गहरे चला जाता है । और वह विद्वेष यहाँ स्वभावतः चिरस्थाई हो जाता है । क्योंकि अलग-अलग वोटर एक ही गाँव में एक ही साथ रहते हैं । पार्टी का उम्मीदवार तो जीतकर चला जाता है । गाँव के लोग चुनाव का वही विष पिये आपस में लड़ते हैं—सवर्ण शूद्र से, शूद्र गरीब से, गरीब अमीर से, हिन्दू मुसलमान से……… ।

नेताई : तुम्हारा विश्वास प्रजातंत्र में नहीं है, तभी इस तरह सोचते हो ।

सुराजी : हर चुनाव के पहले किसी न किसी बहाने मुझे जेल में क्यों डाल देते हो ?

नेताई : अपने आप से पूछो । और दिमाग सही करो अपना ।

(मैना ठहाका मारकर हँस पड़ती है ।)

महतो : बाबा, किससे बातें करते हो ?

मैना : कहीं जाकर किसी से रुपये वसूलेंगे । किसी हाकिम के दरबार में बैठेंगे । कहीं लूटेंगे । कहीं बाँटेंगे । इन्हें इन बातों से क्या लेना देना ।

नेताई : तुम लोगों को इसका जवाब जल्दी ही मिलेगा ।

(जाता है ।)

गजाधर : हम उसी इंतजार में बैठे हैं ।

सुराजी : मैं सोचता हूँ, यदि भयानक से लोगों को लड़ना नहीं आयेगा तो भय और अधिक हो जायेगा ।

मैना : पर भयानक को भय से नहीं लड़ा जा सकता ।

महतो : हे राम !

—

(पांचवां दृश्य)

(ठाकुर का वही दरवाजा । सुराजी आते हैं ।)

सुराजी : ठाकुर जी ! ठाकुर जी !

(ठाकुर भीतर से निकलते हैं और दौड़कर सुराजी के चरण स्पर्श करते हैं ।)

ठाकुर : इतनी रात को । मुझे खुद बुला लिया होता । पहले यह बताइए भोजन हो गया है ?

सुराजी : हाँ, मैना के घर । बहुत अच्छा भोजन बनाती है ।

ठाकुर : बहुत अच्छा किया गाँव लौट आए ।

सुराजी : यहीं लौटने के लिए ही बाहर जाता हूँ । जब भी लौटता हूँ, अपने इस गाँव का नया दर्शन करता हूँ ।

ठाकुर : इस गाँव-जवार का सौभाग्य है कि आप जैसे त्यागी मनुष्य ने यहाँ की धरती पर जन्म लिया ।

सुराजी : अपनी प्रशंसा सुनने नहीं आया हूँ ।

ठाकुर : आपकी प्रशंसा कर हमें खुद गौरव मिलता है ।

सुराजी : गौरव केवल आत्म का होता है । मुझे थोड़ा सा काम चाहिए ।

ठाकुर : आज्ञा दीजिए ।

सुराजी : आपके खेत की सिंचाई कैसे होती है ?

ठाकुर : वही कुएँ के पानी से, बैलों वाली रहँट चलाकर ।

सुराजी : मैं चार घंटा रहँट चलाने की मजदूरी करना चाहता हूँ ।

ठाकुर : नहीं । आप मेरे यहां मेरे साथ सदा भोजन कीजिए— मुझे सुबह शाम श्रीमद्‌भागवत पढ़ा दीजियगा–बस ।

सुराजी : नहीं ठाकुर, मैं शारीरिक श्रम करके खुद अपनी रोटी बनाकर खाना चाहता हूँ ।

ठाकुर : जो आपकी आज्ञा ।

(मौन छा जाता है ।)

ठाकुर : आजादी की लड़ाई लड़ी है आपने ।

सुराजी : क्या बताऊँ ? आंसू बहने लगते हैं ।

ठाकुर : आपको यह सुराजी नाम गांधी जी का दिया हुआ है, कैसे ? कब की बात है ?

सुराजी : मैं तब यही पन्द्रह सोलह साल का था । अपने मामा के साथ अयोध्या गया था । चैत्र रामनवमी का मेला देखने । उसी मेले में एक जगह कोई आजादी की लड़ाई के बारे में भाषण दे रहा था । उसके साथ कई सत्याग्रही भी थे जो छोटी-छोटी किताबें बेच रहे थे । एक किताब मैंने भी खरीदी । रात भर उसे पढ़ता रहा । नाम था— 'भारत माता' । दूसरे दिन मैं मामा को छोड़कर उन्हीं सत्याग्रहियों के साथ चला गया । तीन महीने बाद मैं उन्हीं के संग साबरमती आश्रम पहुँचा । वहाँ संध्या समय गांधी जी को पहली बार देखा । साबरमती जेल की ओर वह टहलने जा रहे थे । वह जगह साबरमती स्टेशन के पास ही थी । उन्हें देखकर मैं रोने लगा । लोग मुझे चुप कराने लगे । गांधीजी मेरे पास आये । पूछा-तुम्हारा नाम क्या है ? कहाँ से आये हो ? मेरे मुँह से कोई शब्द नहीं फूट रहा था । गांधी जी मेरी पीठ थपथपाकर बोले—इसका नाम सुराजी है ।

ठाकुर : फिर क्या हुआ ?

सुराजी : मैं आश्रम में रहने लगा। लोग मुझे सुराजी के नाम से पुकारने लगे। जीवन में पहली बार एक ऐसे अनोखे वातावरण का अनुभव किया जो वास्तव में महान था। आश्रम और बापू, सत्याग्रह की वह साधना और अनुशासन, सब मानो मेरी अपनी ही अभिव्यक्ति थी। मेरे अपने ही प्राणों का स्पंदन हो रहा था जैसे उस संपूर्ण में। पता नहीं लगता था कब सवेरा हुआ और प्रचंड वेग से दौड़ता हुआ दिन कब बीत गया था। सारे दिन अपने निर्धारित कामों में तन-मन से डूबा रहता था एक महान यज्ञ के एक याजक के रूप में। और प्रायः प्रतिक्षण अपने अंदर एक परम स्वस्ति-अनुभूति का शीतल स्पर्श पाता था।

(आंखों से आंसू बहने लगते हैं। गला रुंध जाता है।)

सुराजी : और अब यह उसी आजादी के बाद की मेरी जन्मभूमि है।

ठाकुर : धैर्य रखो। हमें आशीर्वाद दो। हम कितने भी थोड़े हैं, कम हैं, तुम्हारे उस स्वप्न को मिटने नहीं देंगे।

(सन्नाटा छा जाता है। सुराजी अपने आंसू पोंछ रहे हैं।)

सुराजी : बेटी मैना ने तुम्हें जो बताया, मुझे भी बताया, वह क्या है ठाकुर?

ठाकुर : यह उसकी ईमानदारी है।

सुराजी : पर उसका अर्थ क्या है? किस प्रेरणा से, किस बल से उसने ऐसा किया? मुसाफिर को मारकर तालाब में फेंक देना....। और उसका धन रख लेना....।

ठाकुर : उसने हमें बता दिया, यह उसका कितना बड़ा नैतिक साहस है!

सुराजी : पर इसका अर्थ क्या है?

ठाकुर : यह मैं नहीं जानता।

सुराजी : यही है अपरिचय का दंड।

ठाकुर : मैं समझा नहीं।

सुराजी : सामाजिक अन्याय के भीतर से जो गहरा अंधकार पैदा होता है, उसी में सारा कुछ अपरिचित हो जाता है। कौन क्या है, कहां है, कैसे है, सब कुछ लुप्त हो जाता है। जब सही पहचान खत्म हो जाती है, तभी हिंसा आती है।

(किसी के आने की आहट होती है।)

ठाकुर : कौन है?

(गंगा, तीस वर्षीय स्त्री का प्रवेश)

ठाकुर : गंगा! तुम? क्या है? इस तरह कांप क्यों रही हो? बोलो, बात क्या है?

गंगा : आज रात सुराजी को लोग जान से मार डालने वाले हैं।

सुराजी : कौन लोग हैं बेटी? मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। घबड़ाओ नहीं।

गंगा : नेताई के घर में शाहजी का बड़ा लड़का, सहदेव, बरनपुर के दो गुंडे ....। नेताई की पत्नी फुलगेंदा ने आकर मुझे बताया है।

ठाकुर : मैं जाता हूँ नेताई के घर।

सुराजी : मैं भी साथ चलता हूँ।

ठाकुर : आप यहीं रुकिये बाबा।

सुराजी : मुझे किसी से क्या भय! मुझे अकेले जाने दीजिए!

(सहसा नेताई के साथ तीन व्यक्तियों का प्रवेश। तीनों व्यक्तियों के हाथ में लाठी है।)

नेताई : किसी को कहीं जाने की जरूरत नहीं है।

ठाकुर : नेताई !

सुराजी : लो मारो। दो मुझे मृत्यु की भिक्षा।

नेताई : या तो तुम सुबह गाँव छोड़कर चले जाओ। या सुबह तुम्हारी अर्थी निकलेगी।

ठाकुर : होश में रहो। एक-एक के हाथ तुड़वाके रख दूँगा।

सुराजी : सुनो! मैं अपनी इस जन्मभूमि से हर्गिज बाहर नहीं जाऊँगा। तुम्हारी कायर हिंसा और आतंक का जवाब दूंगा अपने रक्त की आखरी बूंद तक।

नेताई : पकड़ लो इस औरत को।

(वे झपटते हैं। सुराजी गंगा को अपने पीछे छिपाते हैं।)

सुराजी : गंगा पर कोई हाथ नहीं लगा सकता।

ठाकुर : कायर! बुजदिल।

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(पर्दा उठता है। मंच खाली है। पृष्ठभूमि से संगीत सुनाई दे रहा है। रात का समय है। सिपाही डंडा पटकता, सीटी बजाता हुआ आता है।)

सिपाही : ऐ बच्चा लोग शोर बंद करो। अब खेल शुरू होने में देर नहीं है। सब तैयार है—काठ का घोड़ा खेल।

(दर्शकों में से आवाजें आती हैं।)

पहली आवाज : खेल नहीं। कठघोड़ा की नाच।

दूसरी आवाज : नाच नहीं। मैना का रसीला। उर्फ कठघोड़ा का खेला, गाँव-गाँव का मेला।

सिपाही : चोप्प रहो भाई। 'साइलेंस प्लीज' मतलब मेहरबान चुप रहिए।

(वादक आते हैं। संगीत शुरू करते हैं। मैना गाना शुरू करती है, उसके वादक साथी उसके साथ गाते हैं।)

होजी, गिरजा नन्दन असुर निकन्दन जगवन्दन शुभ दायक जी।

होजी, भजन तुम्हारा करूं हमेशा श्री गणपति गणनायक जी॥

श्री गणपति मैं तुमको सुमिरों सदा आप हैं शुभकारी,
लज्जा मेरी राख लीजियो तुम संतन के हितकारी।
होजी, दीनदयाल कृपा के सागर कलिमल दुष्ट विनाशक जी॥
होजी भजन तुम्हारा करूं ·····॥

रिद्धि-सिद्धि के तुम हो दाता जय गणपति जी शुभकरनम्।
धूप-दीप औ लिये आरती सदा तुम्हीं पर चितधरणम्॥
होजी, होउ प्रसन्न हमारे ऊपर सुख-संपत्ति उपजायकजी।
होजी, भजन तुम्हारा करूं हमेशा श्री गणपति गणनायक जी॥

(जैसे ही यह गाना समाप्त होता है, पृष्ठभूमि में मिर्जा साहब का घोड़ा हिनहिनाता है और करिंगा घोड़े को शांत करता है–ऐसी उसकी आवाज आती है। क्षणभर बाद ही मिर्जा साहब काठ के घोड़े पर बैठे हुए आते हैं। उनके पीछे-पीछे उनका दोस्त करिंगा आता है। मिर्जा साहब का घोड़ा बहुत बिगड़ा हुआ है। वह बेतरह पैर पटक रहा है और खड़ा हो होकर हिनहिना रहा है। करिंगा उसे वश में करने का प्रयत्न कर रहा है। पर वह घोड़े को उल्टे कभी-कभी भड़का भी रहा है। इसी प्रकार मंच पर करिंगा और मिर्जा साहब के व्यापार ही रहे हैं। वादक बाजा तेज बजाने लगते हैं। मैना गाती है।)

मिर्जा साहब घोड़वा कुचउलैं
घोड़वा कुचउलैं–अइलैं–
अइलैं यहि गाँव अइलैं।
अइलैं यहि गाँव अइलैं॥
गिटपिट-गिटपिट बोलैं बोलिया
बोलैं बोलिया-कुछ हू परियाय नाहीं-अइलैं–
अइलैं यहि गाँव, अइलैं।

(गाना अपनी तेजी में चलता रहता है : करिंगा पूरे स्टेज पर थिरक-थिरक कर नाचता है। मिर्जा साहब भी नाचते हैं। गाना खत्म होते-होते मिर्जा साहब चिल्ला उठते हैं।)

मिर्जा : बस ! बन्द करो गाना-बजाना, नहीं तो टुम लोगों को मार-मार कर बना दूँगा जनाना। बन्द करो गाना।

करिंगा : हां हां मिर्जा साहब, बन्द हो गाना बजाना। और मिर्जा साहब। इस समय आप की ही सूरत लग रही है जैसे जनाना।

मिर्जा : क्या है बे करिंगा ? तुम हमको इस भाफिक बोलटा है। टुम हमको नहीं जानटा। हम टुमारा खाल खिंचवा कर उसे मखमल में जड़वाकर, शीशे में मढ़वाकर ।

करिंगा : (सहसा) और अपनी दाढ़ी में सिलवाकर उसे अपनी तोंद पर रखवाकर उस पर सो जायेगा।

मिर्जा : क्या कहा टूने बिली बास्टक, मारूँगा ऐसा सोटा कि जा के गिरेगा डिल्ली फाटक। टूने हमारी लाख रुपये की दाढ़ी और सवा लाख की तोंद का मजाक उड़ाया। तो सुन बे करिंगा।

करिंगा : हाँ मिर्जा साहेब।

मिर्जा : सुन ले अपनी सजा। माबदौलत ने टुमको नाराज होकर पचास रुपये का इनाम दिया।

करिंगा : **(घबड़ा कर)** हां हां हां मिर्जा साहब, इतना बड़ा इनाम सुनकर आपका घोड़ा बेचारा लीद करने लगा। हइ-हई-हइ, च-च-च-च।

(करिंगा अपनी मसखरी में घोड़े की पूंछ के नीचे अपना कपड़ा फैलाता है। मिर्जा साहब नाराज होकर अपनी कमर में बंधा हुआ कटा डंडा करिंगा के सिर पर मारते हैं और उसे मंच पर दौड़ाते हैं।

करिंगा : **(दौड़ता हुआ)** दोहाई माई-बाप की! दोहाई मिर्जा साहेब की! दोहाई गरीब परवर की!

मिर्जा : अबे करिंगा!

करिंगा : मिर्जा साहेब, हे मिर्जवा साहेब, बहुत अबे-तबे करोगे न तो—**(दांत पीसता है, हाथ मींजता है।)**

मिर्जा : हां हां टुम क्या करेगा हमारा?

करिंगा : हम टुमको घोड़ा समेत उलट देगा और टुमारी टोंड पर सवारी कर लेगा।

मिर्जा : अच्छा-अच्छा। जाओ—भेली गुड़ **(वेरी गुड की जगह)**—टुमको हमने माफ किया। हां, तो सुन बे करिंगा - - ।

करिंगा : **(बिगड़ कर)** फिर वही अबे-तबे वाली बात।

मिर्जा : अरे रे रे रे भूल जो गया करिंगा। भूल हो गया। बात यह है कि मैं पचास साल इंगलिस्टान में रहा, पचास साल नखलिस्तान में रहा, और पचास ही साल रेगिस्तान में रहा।

करिंगा : **(सहसा)** अउर पचास ही साल कबरिस्तान में रहा....।

मिर्जा : भेली गुड—भेली गुड़। पचास साल मैं कबरस्तिान में रहा।

करिंगा : वह तो साहब, आपकी सूरत-शक्ल से ही मालूम हो रहा है।

मिर्जा : खूबसूरत हूं न मैं?

करिंगा : अरे क्या कहने! जैसे बन्दरों में लंगूर, जैसे उल्लुओं में मुआ चिरई, जैसे सियारों में कनकटवा। **(दर्शकों की ओर बढ़कर)** हे भइया हे! केहूं के पास शीशा होय तो देव, मिर्जा साहब अपने मुंह में करिखा पोति हैं—अरे उहै आपन मुंह देखि हैं।

मिर्जा : ए करिंगा।

करिंगा : ऐसे बोलइबो मिर्जा साहेब तो हम बोलत नाहीं। तो हमें यस बुलावो—श्री श्री श्रीमान मिस्टर श्रीमती मिसेज करिंगा प्रसाद नारायण बहादुर रहमान पी.सी.यस. आई.सी.यस., यक्स. वाई. जेड. ही ही ही क्या कर रहे हैं आप लोग। मैं अपना पूरा नाम भी न बताऊं? देखिए मिर्जा साहेब ये लोग हंस रहे हैं।

(अगर उस समय दर्शक न हंस रहे हों तो वह कहेगा देखिये मिर्जा साहेब, ये लोग नहीं हँस रहे हैं। बड़े मनहूस हैं।)

मिर्जा : अच्छा, अच्छा। अब टुम अपनी बकवास बन्द कर करिंगा।

करिंगा : हाँ हाँ, मिर्जा साहेब, अब आप अपनी बकवास शुरू कीजिये! चालू हो जाइये।

मिर्जा : करिंगा। जब हम इधर से आ रहा था तो इधर कुछ गान-बजाना हो रहा था—

करिंगा : हाँ मिर्जा साहेब, इधर गाना-बजाना हो रहा था।

मिर्जा : टुम करिंगा हमको जल्दी से बटाओ यह कौन सा मुल्क

है ? यह कौन सी जगह है ? क्या है यह सब झाड़-झंखाड़ ?

करिंगा : हुजुर ! **(जनता को दिखा कर)** यह हिन्दुस्तान मुलुक है।

मिर्जा : हिन्दुस्तान मुलुक क्या होता है ?

करिंगा : यह तो मुझे भी नहीं मालूम साहेब। मुला यह मालूम है कि यह भारतवर्ष है। इंडिया है।

मिर्जा : आगे चलो करिंगा।

करिंगा : इंडिया के भीतर यह जिला चिल्लपों है। **(सहसा)** अरे यह सब लिखते चलिए मिर्जा साहेब, नहीं तो सब आपके पेट के भीतर से घोड़े के पेट में चला जायेगा।

मिर्जा : **(चश्मा ठीक करते हुए)** अबे मेरी दावात तो ले आ।

करिंगा : **(एक बड़ा सा घड़ा लाकर देता है।)** यह लीजिए मिर्जा साहेब।

मिर्जा : **(डंडे से लिखते हैं)** हाँ, बोल करिंगा।

करिंगा : जिला चिल्लपों, तहसील खटपट गंज, परगना टांगतोड़, तप्पा गलाचोंट, मौजा सफाचट्ट।

मिर्जा : अच्छा, भेलो गुड़। यह किसका दरवाजा है ?

करिंगा : रामफेर चौधरी वल्द खुड़बुड़ चौधरी, बाबा का नाम चम्पत राय, पर-बाबा का नाम हाय-हाय और आजा का नाम—

मिर्जा : हाँ, हाँ, हाँ ! इस्टाप हो जा करिंगा, इस्टाप हो जा यानी रुक जा। **(रुक कर)** हाँ अब बोल ! यहाँ रामफेर चौधरी के दरवाजे पर यह गाना-बजाना कैसा माफिक हो रहा था ? झट-पट, कटपट, खटपट सबको हमारे सामने टुम हाजिर करो। **(डाँट कर)** यह कैसा गाना-बजाना हो रहा था कि हमारा लाख रुपम का घोड़ा यहाँ बिगड़ गया ?

करिंगा : **(सहसा)** और हाय बेचारे को कुड़कुड़ी हो गई।

मिर्जा : चुप रह करिंगा। हम जो टुम से कहता है वह—

करिंगा : हाँ, मिर्जा साहेब हाजिर। **(सिर खुजलाता हुआ)** बात यह है मिर्जा साहेब कि रामफेर चौधरी की पतोहू का गौना आए आज पाँच साल हो गए मुला उसके कोई बाल-बच्चा नहीं हो रहा है। सो वही रामफेर चौधरी अपने दरवाजे पर देवी-देवतन के पूजा-पाठ कराय रहिन हैं।

मिर्जा : ओ हो ! ओ हो ! आलू राइट, आलू राइट। तो ये गाने वाले वही पूजा-भजन गा रहे थे। सुनो करिंगा।

करिंगा : हां साहेब !

मिर्जा : गोनेवालों से कहो कि मालिकों के मालिक, शहंशाहों के शहंशाह मिर्जा साहेब तशरीफ ले आए हैं। उनसे कहो, मेरी खुशी के लिए वे कोई बहुत ही बेहतरीन बेनजीर आलू राइट गाना गायें।

करिंगा : अच्छा साहेब, फौरन से पेस्तर लीजिए। **(गाने वालों की ओर बढ़ता है।)**

अरे ऐ ओ गाने वालों ! गाने वालो ! अरे कहां बैठे हो तुम लोग ?

मैना : ओ हो ! सलाम हुजूर सलाम। कहिये—

करिंगा : अजो कहना क्या है ? वह देखो हमारा घोड़ा खड़ा है। देखो–देखो उधर।

मैना : साहेब, वह तो घोड़े पर कोई आदमी बैठा है।

करिंगा : नहीं, नहीं। वह पूरा घोड़ा है। वह बिलायती घोड़ा है, समझे। हाँ तो वह घोड़ा तुम लोगों का एक फड़कता हुआ गाना सुनना चाहता है।

मैना : अच्छा तो सुनिए।

करिंगा : सुनाओ प्यारी ! दिल जहान से न्यारी।

(**गाती है**)

तोरी गठरी में लागा चोर, बटोहिया का सोवै।
पाँच पचीस तीन हैं चोरवा, यह सब कीन्हा शोर
सबेरा बाट अन्हेरा, फिर नहिं लागै जोर—बटोहिया०

करिंगा : (गोने के बीच में और बाद में) जियो-जियो आबाद रहो। चाहे यहाँ रहो, चाहे फरुखाबाद रहो। जियो-जियो।

मिर्जा : करिंगा—करिंगा ! बहुत अच्छा गाती है। जाओ इस गाने वाली को मेरी पार्टी का टिकट दे दो।

मैना : आपकी पार्टी का नाम ?

मिर्जा : आया राम गया राम।

मैना : बाप का नाम ?

मिर्जा : नेताई राम।

मैना : चाचा का नाम ?

मिर्जा : शाहजी राम।

मैना : मामा का नाम ?

मिर्जा : जमींदार सहदेव राम।

मैना : अरे जमींदारी तो कभी की टूट गई।

मिर्जा : जमींदारी टूट गई, मगर हम तो मौजूद हैं। नाम बदल दिया, काम आसान किया। देखो, जो राजा बादशाह था मिर्जा साहबजाद था, सेठ—साहूकार था, बाबू नबाब हाकिम हुक्काम था, पंडित जोगीराज था, खूनी—अपराधी, चोर-उचक्का, दगाबाज था, सबने अपनी-अपनी पार्टियां बना लीं। बात वही पुरानी, झंडा नया निशानी। तुम्हें क्या इसमें परेशानी, बोलो दिलजानी।

मैना : यही है तेरे राक्षस की निशानी।

मिर्जा : क्या ? मुझे राक्षस कहा ? करिंगा।

करिंगा : जी हुजुर, माई बाप।

मिर्जा : इस बदजात औरत को मारकर, नहीं इसका गला काट-कर, नमक मिरच लगाकर, प्लेट में सजाकर नगर के चौराहे पर रख दो।

मैना : ताकि राक्षस आये और खाये। खाये और जाये। जाये और आये। आये और जाये। सब घर जलाये।

(उसी क्षण सिपाही के साथ नेताई का आवेश में आना)

सिपाही : बंद करो यह खेल। नाहीं तो चलो जेल।

नेताई : समझ गया तेरा नाटक। अब यहाँ नहीं होगा।

(चारों तरफ से आवाजें आती है—जरूर होगा। अब इसे कोई नहीं रोक सकता।)

(दूसरा दृश्य)

(मैना का घर। मैना उसी कठघोड़ा खेल के विशेष पहनावे में है। एक आदमी आता है। एक हाथ में भरा हुआ बैग है। दूसरे में अटैची।)

आदमी : आज रात मैं यहाँ बिता सकता हूँ ? परदेश गया था। अपने देश लौट रहा हूँ। सुबह होते ही चले जाना है। तुम बहुत थक गई होगी। मैं भी तुम्हारा वह खेल देख रहा था। बहुत अच्छा खेल था। कितना अच्छा गाती हो। मैं भी कभी गाता था अपने उसी गाँव में। पर जैसे वह गाँव नहीं रहा। तभी तो परदेश जाना पड़ा। यहाँ बैठ जाऊँ ? तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही हो ? **(बैठता है)** जब मैं परदेश जा रहा था, गाँव की सड़क पर तुम्हारी चाय की वह छोटी सी दुकान थी। तुम्हारे हाथ की तब चाय पी थी। बहुत मीठी चाय थी। प्यास लगी है। पानी पिला सकती हो ?

मैना : वह घड़े में पानी रखा है।

(वह उठकर घड़े में से गिलास में पानी लेता है। मैना के पास जाता है।)

आदमी : तुम्हें भी प्यास लगी होगी। लो पहले तुम पी लो। पीओ न।

(मैना पानी पीती है। फिर वह गिलास लेकर पानी लेता है।)

आदमी : और पीओगी ?

(वह सिर हिलाती है। वह पानी पीता है।)

आदमी : भोजन बनाने की कोई जरुरत नहीं है। गाड़ी से जब उतरा शाम को चार बजे, तब स्टेशन पर ही कुछ खा लिया। पूड़ी-सब्जी बहुत अच्छी थी। आम का अचार भी था। बहुत दिनों बाद वह अचार खाया। फिर मैंने ढेर सारी पूड़ी सब्जी खरीद ली। **(बैग में से कपड़े में बंधी पोटली निकालकर खोलने लगता है।)** अचार तो मुफ्त में ही मिलता है। एक थाली लाओ न। बताओ यह खाना कहाँ रखूँ ?

(मैना उठकर भीतर जाती है। एक थाली लाकर रख देती है।)

आदमी : लो, इसमें खाना परसो न। हम दोनों एक ही थाली में खायेंगे। मैं छुआछूत नहीं मानता। और तुम्हारे साथ खाना······।

मैना : मुझे भूख नहीं है।

आदमी : फिर मैं भी कहाँ भूखा हूँ ? स्टेशन से इक्के पर बैठकर चला, तब मुझे पता था, तुम्हारे गाँव तक आते-आते रात हो जायेगी। मैं तो पैदल चला जाता अपने गाँव। चांदनी रात थी, पर गाँव में नाच–बाजा सुना। फिर तुम्हें देखा गाते हुए······। वह कौन था जिसने उस तरह खेल बंद करा दिया ? बड़ा बदमाश था। आओ खाना परोसो न। पूड़ी और ठंडी हो जायेंगी। जाओ मत खाओ। मैं भी नहीं बोलूँगा। सुबह तड़के भोर में चला जाऊँगा।

(चारपाई पर सो जाता है। थोड़ी देर बाद मैना आती है। पूड़ी सब्जी थाली में परोसती है।)

मैना : बिल्कुल सूखकर लकड़ी हो गई है।

आदमी : **(उठकर)** तुम बैठो यहाँ। आराम करो। मैं गर्म कर लाता हूँ।

(मैना थाली लिए अंदर जाती है।)

आदमी : **(दरवाजे के भीतर सुनाता हुआ)** अरे, मैं खाना बनाना जानता हूँ। एक मिनट में कोयले की अंगीठी जला देता हूँ। उधर सब्जी बनती रहती है, इधर मैं आटा गूंध लेता हूँ। दो मोटी-मोटी रोटियां बनाता हूं, बस। खाना खाने से पहले पूरा गिलास पानी पी लेता हूं। फिर मजे से खाना खाता हूं। खाने के बाद फिर पानी नहीं पीता। एक नींद सो लेने के बाद फिर पानी पीता हूं। **(गा पड़ता है।)**

मोटी मोटी रोटियां बनाइब बरेठिन कि
भोरवैं चलै क बाय घाट रामा हो
भोरवैं चले क बाय·········
मोटी मोटी रोटिया तबै नीक लागे कि
सजनी परोसा होय रामा हो
सजनी परोसा होय········।

(मैना थाली परोसे ले आती है। हाथ में पानी भरा गिलास भी ले आई है। आदमी जमीन पर आराम से बैठ जाता है।)

आदमी : आवो, तुम भी बैठो न।

मैना : खाओ, मैं बाद को खा लूंगी।

आदमी : मेरी कसम ?

मैना : **(स्वीकृति में सर हिलाती है।)**

आदमी : तब खाना जूठा नहीं हो जायेगा ?

मैना : मैं जूठा ही खा लूंगी।

(आदमी गिलास भरा पानी पी लेता है।)

आदमी : पानी में कैसी गंध है ! जैसे चूहा मारने की दवा ····**(हंसने लगता है।)** गाँव के कुएँ भी कितने गंदे हो गए हैं। कभी कोई सफाई ही नहीं करता। शहर का पानी कितना साफ होता है ! **(प्यार से)** लो बस, श्री गणेश···श्री गणेश कर दो।

(साग्रह पहला कौर मैना के मुंह में डाल देता है। फिर मजे से खाने लगता है। मैना खाने लगती है अपने मुँह का अन्न। पर निगल नहीं पा रही है। उसे उबकाई आ रही है। वह उठकर अंदर भागती है। भीतर से उल्टियाँ आने की आवाज सुनाई देती है। आदमी भीतर दौड़ता है। मैना उसे दरवाजे पर ही मिल जाती है।)

मैना : पता नहीं, कैसी हो रही है तबियत।

आदमी : आवो, यहाँ सो जाओ।

(खाट पर सुलाता है।)

मैना : तुम खाना तो खा लो।

आदमी : नहीं, अब इच्छा नहीं है।

मैना : मेरी कसम है। तुम इस तरह भूखे नहीं सोओगे। चलो खाओ। आवो बैठो।

(मैना पंखा झल रही है। वह भोजन करता है।)

मैना : तुम्हें उल्टी नहीं होती ?

आदमी : कभी नहीं ! मैं तो आज तक कभी बीमार ही नहीं पड़ा।

मैना : हे राम !

(रो पड़ती है ।)

आदमी : रोती क्यों हो ? तुम यहाँ अकेली हो तो क्या हुआ । तुम कहोगी तो मैं कल नहीं जाऊंगा । क्या बात है ? इस तरह नहीं रोते । कल सुबह मैं उस बदमाश आदमी को देखूँगा । पुलिस का सिपाही उसके साथ है तो क्या हुआ ? सारा गाँव तो उसके साथ नहीं है । हर गाँव में, हर जगह यहाँ तक कि शहर में भी ऐसे दो एक गुंडे बदमाश होते ही हैं ।

(हिचकियां आने लगती हैं । खाना छोड़कर उठ जाता है)

पेट भर गया । बिल्कुल ।

मैना : उल्टी कर दो ना । उबकायी आ रही है ।

आदमी : नहीं । हिचकी है । घर वाले याद कर रहे होंगे ।

मैना : कौन कौन हैं तुम्हारे घर ?

आदमी : मेरी मां है । काका हैं । मेरे दो लड़के हैं ।

मैना : और ?

आदमी : मेरी घरवाली को चेचक हुआ, उसी में स्वर्गवास हो गया ।

मैना : **(घड़े से पानी निकालकर देती है)** लो पीलो पानी । उल्टी हो जायेगी । कै हो जाना अच्छा रहेगा ।

आदमी : मैं खाने के बाद पानी नहीं पीता । एक नींद सोकर तब खुद पी लूँगा ।

मैना : तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है ।

आदमी : अरे, मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है । तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं लग रही है । तुम्हारी आँखों से इस तरह आँसू क्यों बह रहे हैं ?

मैना : हे ईश्वर । हे मेरे देवतन बाबा ।

(वही तीनों पुरुष प्रकट होते हैं । वह खाट पर सो गया है ।)

पहला पुरुष : नीलकंठ तुम नीले रहना
इसकी बात राम से कहना
सोते हों तो जगा के कहना
जागते हों तो कान में कहना ।

दूसरा पुरुष : जो दूसरे को जानता है
वह जानकार है ।
जो अपने को जानता है
वह जगा हुआ है ।

तीनों पुरुष : नीलकंठ तुम नीले रहना
इसकी बात राम से कहना ।
सोते हों तो जगा के कहना....... ।

(मैना खाट की ओर बढ़ती है । उसका माथा छूते ही चीख पड़ती है । उसे उठाकर बाहों में भरकर रोती हुई देखती है । धीरे धीरे शांत हो जाती है ।)

मैना : **(गिलास में पानी भरकर)** सुनो ! जागो ! हे सुनो ! पहली नींद पूरी हो गई न । लो अब पानी पीलो । हे ! मुंह खोलो ।

(उसके मृत ओठों पर गिलास लगा देती है । खुले मुँह से पानी बाहर बह रहा है ।)

(तीसरा दृश्य)

(सुराजी का दरवाजा । सुबह का वक्त। सुराजी भजन गाता हुआ चरखे पर सूत कात रहा है। वैष्णव जन ते तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे ....।' ठाकुर का आना)

ठाकुर : राम राम बाबा ।

सुराजी : राम राम ठाकुर । आवो । बैठो ।

ठाकुर : बड़ा जुलुम हुआ, गाँव के तालाब में अभी अभी लोगों ने फिर एक लाश देखी है। सारा गाँव तालाब के किनारे गया है। मैं भी वहीं से आ रहा हूँ। लाश पर न कोई चोट है, न कोई निशान है। आत्महत्या का भी केस नहीं लगता। डूबकर मरा होता तो पानी से पेट फूला होता।

सुराजी : राम राम राम ! वह आदमी कहाँ का है? कोई पहचान, कोई शिनाख्त ?

ठाकुर : कहीं कुछ भी नहीं। सारा गाँव हाय हाय कर रहा है। नेताई ने सहदेव को पुलिस थाने भेजा है—पुलिस बुलाने के लिए। नेताई बमक रहा है—गाँव के दुश्मनों को फँसाकर अब जेल की हवा खिलाऊँगा।

सुराजी : हे भगवान, यह कैसा राक्षसी कोप है ?

(मैना आती है। उसके हाथ में कुछ सामान है। वह आकर मूर्तिवत खड़ी हो जाती है।)

ठाकुर : मैना !

सुराजी : मैना बेटी ! इधर आओ।

(सुराजी उठकर मैना के कंधे पर हाथ रखते हैं। उसे आगे ले चलते हैं।)

सुराजी : बैठो बेटी। तबियत तो ठीक है न ?

मैना : **(चुप है।)**

सुराजी : क्या बात है ? यह क्या ले आयी हो ?

मैना : **(बिल्कुल ठंडे स्वर में)** यही सब मिला है उसके सामान में। बक्से में से यह थैली मिली है। इसमें पांच सौ चालीस रुपये तीस पैसे हैं। ये कपड़े हैं। बैग में इतना ही था—एक चद्दर, एक धोती, एक अँगोछा। बीड़ी के बंडल। मिठाई। मूँगफली।

ठाकुर : वह कौन था ?

मैना : बड़ा छैल बाँका था। शरीफ। दयालु। बड़ी ममता थी। मेरे लिए स्टेशन से ही पूड़ी सब्जी, मिठाई, अचार ले आया था। खाने से पहले ही वह भरपेट पानी पी लेता था। फिर खाना खाता। चूहा मारने की दवा होती है न, मेरी चमरटोलिया में बहुत चूहे थे। ग्राम विकास वाले आये थे चैत महीने में। सबको इतना सारा मसाला दे गए थे चूहा मारने के लिए। वही थोड़ा पानी में घोलकर दे दिया **(हँसने लगती है, बच्चों जैसी हँसी)** उसकी यह धन दौलत कहां रखूँ बाबा ? उसने अपने गाँव का पता भी नहीं बताया। नाम भी नहीं। इसे किसे सौंप दूँ ? आप लोग मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ? मैंने क्या किया ?

सुराजी : जो कुछ तुमने किया, वह सब कुछ हम सबने मिलकर किया।

मैना : मैंने क्या किया ?

ठाकुर : उसके धन की लालच में किया ?

मैना : मैंने क्या किया ?

ठाकुर : उसकी हत्या की। इसी तरह एक हत्या पहले कर चुकी थी। याद है न ?

मैना : ना ना ना। पहले की तरह यह बिल्कुल नहीं था। वह तो मुझे ही लूटने आया था। यह तो देने आया था मुझे। हाँ····।

ठाकुर : फिर ऐसा क्यों किया ?

मैना : मैंने ऐसा क्या किया ? मुझे ऐसे मत देखो।

ठाकुर : लाओ सारा सामान मुझे दो।

सुराजी : पर यही तो तुम्हारी कमाई है। क्यों ? है न ?

मैना : हाँ। है। किसकी ?

सुराजी : तुम्हारी।

मैना : हाँ।

ठाकुर : अभी पुलिस आती होगी। नेताई ने अब तक पूरा जाल बिछा लिया होगा। तेरे घर की तलाशी होगी····।

मैना : अरे मुझे क्या डर। मैं साफ साफ कह दूँगी। हाँ, मैंने उसे जहर देकर मारा। उसे कंधे पर उठाकर मैंने खुद उसे तालाब में डाला।

ठाकुर : इसका नतीजा जानती हो ?

मैना : मैंने क्या किया ?

सुराजी : तूने कुछ नहीं किया। हमने किया। हम सबने। ठाकुर, यह सब सामान लेकर मेरे घर में रख दो। अगर

इसने सब कबूल कर लिया पुलिस से, तो मैं बयान दूँगा कि कत्ल मैंने किया, उसके धन की लालच में। यह निर्दोष औरत मुझे बचाने के लिए सब अपने सिर पर ले रही है।

ठाकुर : नहीं नहीं, ऐसा आप क्यों करेंगे ? नेताई आपको फांसी पर चढ़ाकर ही दम नहीं लेगा, वह आपके कार्यों, विचारों, तपस्या और त्याग को बदनाम करेगा। अपनी राजनीति के लिए इस्तेमाल करेगा। इस गाँव जवार पर उसकी राक्षसी शक्ति न जाने कब तक हावी हो जायेगी।

सुराजी : पर सच्चाई को कोई तो कबूल करेगा।

मैना : मैं करूँगी।

(अपना सामान लिए तेजी से चली जाती है। ठाकुर उसे रोकने के लिए पुकारते ही रह जाते हैं।)

ठाकुर : अब इसके पीछे जाना होगा।

सुराजी : भय से काम मत कीजिए ठाकुर। बिल्कुल शांत, आश्वस्त चित्त से कीजिए। यदि लोग मृत्यु से नहीं डरते, उन्हें मृत्यु से क्यों डराया जाय ? मृत्यु के संबंध में लोग अगंभीरता से सोचते हैं, इसका कारण है गरीबी, असह दुख, पीड़ा, जिसमें वे जीवन को पाने की खोज करते हैं। इसीलिए वे मृत्यु के संबंध में हल्के ढंग से सोचते हैं।

ठाकुर : पता नहीं, इस हालत में मैना क्या करेगी ?

सुराजी : वह तो कुछ करे, हमें स्वीकार करना होगा पहले। मैना कायर नहीं है। उसका चरित्र उसके गहरे दर्द पर खड़ा है। उसने भयानक गरीबी भोगी है, उसकी आँखों ने अन्यायों को देखा है। उसमें प्रतिहिंसा है। पर उसके चरित्र में अजब ईमानदारी है।

(ठाकुर जाते हैं। सुराजी चर्खा चलाने के लिए बैठते हैं।)

(चौथा दृश्य)

(मैना के दरवाजे पर लोगों की भीड़ जमा है। पुलिस सिपाही उसका बंद दरवाजा पीट रहा है। भीड़ उत्तेजित है।)

रामदास : पंचो, मैना घर में नहीं है।

महतो : उसको आ जाने दो। फिर उसके घर की तलाशी लो।

नेताई : पुलिस कब तक उसका इंतजार करेगी ?

शाहजी : अजी, वह फरार हो गई होगी।

सहदेव : बड़ी बदमाश औरत है।

(लोग बंद दरवाजा पीट रहे हैं। ठाकुर आते हैं।)

महतो : लो सरपंच बाबू आ गए।

ठाकुर : भाई दरवाजा मत तोड़ो। मैना को आने दो।

नेताई : अगर वह फरार हो गई हो तो ?

सिपाही : यह देख लीजिए तलाशी का आर्डर।

शाहजी : इस बार लम्बा हाथ मारा होगा।

सहदेव : गजब की हिम्मत है।

चौकीदार : यही उसका धंधा है।

सहदेव : एक साल के भीतर यह दूसरा शिकार किया उसने।

शाहजी : इस बार मालामाल हो गई होगी।

नेताई : पुलिस !

सिपाही : जी हुजूर !

नेताई : आँगन की खोदाई करनी होगी। हो सकता है और लाशें गाड़ रखी हों आँगन की जमीन में।

(मैना खाली हाथ आती है)

मैना : क्या भीड़ जमा रखी है। खबरदार, हट जाओ मेरे दरवाजे से।

चौकीदार : वाह। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

सिपाही : तलाशी लेने का वारंट है तुम्हारे नाम।

(कागज पढ़ती है।)

मैना : कौन लेगा तलाशी ?

नेताई : हम सब लोग।

मैना : पुलिस सिपाही, सरपंच, महतो, नेताई और चौकीदार-पाँच-पंच मेरे घर की तलाशी ले सकते हैं।

(वही पाँचों लोग अंदर जाते हैं। अन्य जाते हुए लोगों को रोकती है।)

मैना : खबरदार। और कोई मेरे घर में कदम नहीं रख सकता। पैर तोड़ दूँगी, हाँ।

लोग हँस रहे हैं। उसे चिढ़ा रहे हैं। उसका अपमान करना चाहते हैं।)

सहदेव : औरत जात का कोई भरोसा नहीं।

(हँसी)

…ला आदमी : एक हाथ से प्रेम किया, दूसरे हाथ से खून किया।

(हँसी)

दूसरा आदमी : का नाहिं अबला करि सकै, का न समुद्र समाय,
का नाहिं पावक जरि सकै, काल काहि न खाय ।

(हँसी)

सहदेव : रमैइया के दुलहिन लूटें बजार । ब्रह्मा के लूटीं, विष्णू के लूटी, लूटी सकल संसार-रमइया के दुलहिन ... ।

(हँसी)

तीसरा आदमी : ऊपर से राम राम । भीतर से कसाई के काम ।

(ठहाका)

पहला आदमी : सात चूहे खाय के बिलार भईं भक्तिन ।

शाहजी : भाई एक किस्सा बूझो ।

सहदेव : हां शाहजी बुझावो ।

शाहजी : बीसों का सिर काट लिया । ना मारा न खून किया ।

सहदेव : मैना चमारन ।

(**भीतर से लोग निकलते हैं ।**)

सिपाही : कहीं कुछ भी नहीं मिला ।

शाहजी : अरे रातों रात छिपा दिया होगा ।

महतो : सिपाही ने सारा कुछ खुद तलाश लिया ।

नेताई : सुराजी के घर तलाशी होनी चाहिए ।

मैना : दुहाई पुलिस सरकार की । नेताई के घर तलाशी लीजिए । अगर यह अपराध इसी गाँव का है तो माल इसी के घर से बरामद होगा ।

नेताई : ठीक है । अगर मेरे घर में तलाशी के बाद कुछ नहीं निकला तो ?

मैना : अगर शक मुझपर किया गया तो किसी और पर भी किया जा सकता है ।

नेताई : सवाल है कि शक तुम्हीं पर क्यों किया गया ?

मैना : क्योंकि मैं गरीब हूँ । अकेली हूँ ।

नेताई : ठीक है । मैं अपने घर की तलाशी दूँगा । लेकिन अगर कुछ नहीं मिला तो, इसकी मानहानि का जुर्माना कौन देगा ?

ठाकुर : मैना के घर में कुछ नहीं मिला, इसकी मानहानि का जुर्माना कौन देगा ?

शाहजी : इसकी कैसी मानहानि ?

ठाकुर : अगर इसकी कोई मानहानि नहीं है, तो किसी की कोई मानहानि नहीं है ।

सिपाही : मैना ! नेताई पर तुम्हारे शक का आधार ?

मैना : इस गांव जवार में पिछले पच्चीस वर्षों में अगर कहीं कुछ हुआ है तो सब में इन्हीं का हाथ है । इनके कुल सात बीघे खेत हैं और वे खेत भी दूसरों से छीने हुए, फिर भी इनका नया पक्का मकान है, धन दौलत से इनका घर भरा है, आखिर यह सब कहाँ से ? कैसे ?

नेताई : ये सवाल करने वाली तू कौन है ?

मैना : मुझ पर शक करने वाले तुम कौन हो ?

(आपस में लोग बातें करने लगते हैं ।)

नेताई : ठीक है। मैं तैयार हूँ, अगर पुलिस चाहे तो मेरे घर की तलाशी ले सकती है। तालाब में दो-दो बार लाशें मिलीं। इससे यह पूरा गाँव बदनाम होता है। हमारा फर्ज है कि अगर यह हत्या इसी गाँव में हो रही है तो हम अपराधी को पकड़ें। मैं न्याय के पक्ष में हूँ। सत्य की विजय होनी चाहिए—मेरा हमेशा यही असूल रहा है।

(गांव के कुछ लोग नारा लगते हैं--'नेताई जिंदाबाद। नेताई से जो टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा नेताई की जै। नेताई जिन्दाबाद।' लोग जाते हैं।)

(पाँचवां दृश्य)

(नेताई का दरवाजा। गांव के लोग जमा हैं।)

सिपाही : यह सामान बरामद हुआ है। ये कपड़े, यह झोला, रुपयों की यह थैली। झोले में यह मिठाई। बीड़ी के बंडल। यह टार्च.......।

नेताई : यह षडयंत्र मुझ पर किया गया है। यह सरासर जालसाजी है।

सिपाही : पाँच पंचों के साथ मैंने आपके घर की तलाशी ली। मैना आपके घर में नहीं गई।

नेताई : पर यह सामान मेरे घर में छिपाया गया।

सिपाही : तो आप यह कबूल करते हैं कि यह सामान, ये रुपये मुसाफिर के थे।

नेताई : मुझे कुछ भी पता नहीं।

सिपाही : अगर आपको कुछ भी पता नहीं तो आपने मैना पर ही शक क्यों किया ?

शाहजी : मैना का चरित्र ऐसा है।

सिपाही : आप बीच में मत बोलिए।

नेताई : हां-हां, उसका चरित्र ऐसा है। वह कभी-कभी रात में मुसाफिरों को अपने घर में टिकाती है। मालदार मुसाफिर को जान से मारकर धन ले लेती है।

सिपाही : पुलिस को सबूत चाहिए। माल आपके घर से बरामद हुआ।

नेताई : पता है, तुम किससे बातें कर रहे हो ?

सिपाही : अब तक किसी और से बातें कर रहा था, अब किसी और की बातें सुन रहा हूँ।

नेताई : यह सामान मैना के घर तलाशी में निकला, यही रिपोर्ट लिखनी होगी।

सिपाही : इसकी गवाही ?

(मैना के विरोधी कह पड़ते हैं 'हम गवाह हैं। यह सामान मैना के घर से बरामद हुआ।)'

मैना : मैना क्या मर गई है ?

महतो : हम क्या चश्मदीद गवाह नहीं हैं ?

ठाकुर : पुलिस पर इस तरह कोई दबाव नहीं डाल सकता।

नेताई : अब मुझे अपनी सारी ताकत लगानी होगी।

मैना : अभी कुछ बचा रखा है ?

नेताई : तुम लोगों को अनुभव नहीं है।

शाहजी : सिपाही जी ! जरा इधर आ जाइए। **(किनारे ले जाकर, और लोग तलाशी का सामान देख रहे हैं, बातें कर रहे हैं।)** देखिये, आप तो अपने आदमी हैं। आप जो कहेंगे, हम सेवा करेंगे। लाश का 'पोस्ट मार्टम' रिपोर्ट आने से पहले मैं खुद थाने में जाकर ···हां बात पक्की।

सिपाही : पंचो, देख लो, शाहजी पुलिस को घूस देने की बात कर रहे हैं।

सहदेव : जा-जा, बड़ा आया युधिष्ठर बनने।

नेताई : थानेदार से लेकर एस. पी. तक पानी भरा दूँगा। तुझे मेरी ताकत का पता नहीं ! सहदेव सिंह ! यह सामान अपने कब्जे में लो।

(सामान के लिए सहदेव और पुलिस में संघर्ष। एक ओर नेताई और उसके लोग हैं, दूसरी ओर मैना के पक्ष के लोग। संघर्ष।)

ठाकुर : क्या गदर मचा रखा है। यह सामान पुलिस के कब्जे में रहेगा। नेताई तुम्हें किसी का डर नहीं ?

(सामान सिपाही के कब्जे में आ जाता है। सिपाही तेजी से चला जाता है। उसके साथ मैना और उसके लोग जाते हैं।)

नेताई : **(क्षुब्ध)** देखते क्या हो। जाकर छीन लो। गाँव के हद से निकलने न पायें। लाठी लेकर जाओ। फोड दो सर जो विरोध में आए।

(उत्तेजित लोग जाते हैं।)

ठाकुर : **(रास्ता रोकते हुए)** होश में रहो। हम सबको यहीं एक साथ रहना है। नेताई के हाथ के कठपुतले ना बनो। यह नेता है। सबको अपनी नेतागिरी का शिकार बनाता है। इसकी राजनीति काली आँधी है। खबरदार········ सावधान·······।

(नेताई ठाकुर को धक्का मारकर गिरा देता है। सब चले जाते हैं। सुराजी का आना। ठाकुर को उठाते हुए)

सुराजी : उठो ! वायुमंडल में आँधी उठ गई है। क्रुद्ध आकाश हमें थप्पड़ मारने के लिए उद्यत है। वायु-स्तरों मे अंतर आ गया है। एक अंश ऊपर उठा है। दूसरा नीचे गिरा है। आँधी इसी शून्य को भरने के लिए उठी है। जब तक हममें मेल नहीं होता, वायुमंडल का भेद दूर नहीं होता, आकाश शांत नहीं होगा।

तीसरा अंक

(पहला दृश्य)

(दोपहर का समय । मैना का दरवाजा । सुरजा-बीस साल का युवक सिर पर बक्स उठाये, दायें हाथ में झोला लिए, कंधे पर छाता लटकाये आता है ।)

सुरजा : (सामान रखकर पुकार रहा है ।) माई ! माई रे ! ए माई ! माई रे !
(गंगा दौड़ी आती है ।)

गंगा : सुरजा !

सुरजा : काकी !
(बढ़कर पैर छूता है । रामदास और गजाधर दौड़े आते हैं ।)

रामदास : आ गए बेटे !

गजाधर : बड़ा अच्छा किया बेटे, गाँव को मुँह दिखा दिया । बड़ा दुर्दिन है बेटे ! आ गए तुम ।

(सुरजा दोनों के पैर छूकर गले मिलता है ।)

सुरजा : माई कहाँ है काका ?

रामदास : सुबह थाने गई थी ठाकुर और महतो के साथ ।

गजाधर : बस, आ ही रही होगी ।

(धीरे धीरे टोले की औरतें, बूढ़े बच्चे इकट्ठा होने लगते हैं ।)

गंगा : हाय ! कितना गबडू जवान हो गया बेटा ।

एक बुढ़िया : मेरे पास तो आजा । कहाँ है रे ! नाती बाबा ।

(पास आकर पैर छूता है । बुढ़िया उसका मुँह चूमती है ।)

(गंगा जाकर लोटे में पानी और मौनी में गुड़ चबेना लाती है ।)

गंगा : बेटा, पानी पीलो ।

(रामदास अपने घर से एक खाट लाता है ।)

रामदास : (बिछाकर) यहाँ से तुम्हारी खाट भी उठा ले गए ।

गजाधर : दरवाजे पर कुछ भी तो नहीं छोड़ा ।

गंगा : अरे मिट्टी का घड़ा तक फोड़ गए ।

सुरजा : काका, आप लोग बैठो खाट पर, हम तो यहीं ठीक हैं ।
(हाथ मुँह धोता है । जरा सा गुड़ खाकर शेष पानी पी जाता है ।)

सुरजा : काकी । झोले में मिठाई है, सबको बांट दो ।

(गंगा सबको मिठाई देती है ।)

बुढ़िया : (खाती हुई) जुग जुग जियो बेटे !

रामदास : कहाँ से आय रहे हो बेटे ?

सुरजा : कलकत्ता से ।

गजाधर : वहीं नौकरी कर रहे थे ?

गंगा : कभी कोई चिट्ठी पत्री भी नहीं दी । माई की खोज खबर भी नहीं ली । बड़ी विपत काटी माई ने अकेले । अब तक काट रही है ।

बुढ़िया : माई की खोज लेने तो आया है ।

रामदास : कहीं अपने बाप का भी पता लगाया ?

सुरजा : कहीं कोई अता पता नहीं चलता ।

गजाधर : कहीं जिन्दा होंगे तो कभी लौटकर आयेंगे ही ।

रामदास : तुम्हारी माई ने अकेले यहां जो विपत काटी है और इस वक्त उस पर जो बीत रही है, वह भगवान ही जानता है ।

सुरजा : गाड़ी से उतरकर, स्टेशन से जैसे जैसे अपने इस गाँव की तरफ बढ़ा हूँ, यहाँ की एक-एक बात का पता मुझे लगता चला गया ।

गंगा : लो, माई आय गई ।

(मैना आती है । सुरजा दौड़कर माँ के कदमों से चिपक जाता है । और फूट फूटकर रोता है । मैना मूर्तिवत खड़ी है ।)

बुढ़िया : हे रे कठकरेजी । बेटवा रोय रहा है, तू खड़ी देख रही है । अरे छाती से लगाती है कि···

मैना : माई अब तक जिन्दा है, इसीलिए रो रहा है ।

गंगा : अरे दरवाजा तो खोल घर का ।

(कुंजी फेंककर देती है । गंगा दरवाजे का ताला खोलती है । मैना झुककर सुरजा को उठाती है । उसका मुँह देखती है । निःशब्द रो पड़ती है । सुरजा एक-टक माँ का मुख देख रहा है ।)

दूसरा दृश्य

(ठाकुर का दरवाजा । संध्या समय । जमीन पर ठाकुर, सुराजी के साथ सुरजा बैठा है ।)

सुरजा : जब मैं अपने इस गाँव से भागा था, तब मैं शायद दस साल का था । पूरे दस साल बाद लौटा हूँ । मुझे याद है, मैं डर के मारे भागा था – नंगे बदन, नंगे पाँव, सिर्फ एक फटा हुआ जांघिया था मेरे तन पर । यहाँ मैं प्राइमरी स्कूल में पढ़ रहा था चौथी जमात में । शाम को माई पढ़ाती थी । रात को माई रामायण की कहानी सुनाती थी । एक दिन महदेवसिंह जमींदार के मुँह से सुना माई को गाली देते हुए—चमारन की जात, सुना है तू रामायण पढ़ती है । मेरे मुँह से निकला – तो क्या हुआ ? हम आदमी नहीं हैं ? सहदेवसिंह ने मेरे मुँह पर एक झापड़ मारा । माई देखती रह गई ।

(विराम)

एक दिन नेताई के मुख से सुना—अबे चमार के लौंडे । कहाँ जाता है स्कूल पढ़ने । चल मेरी भैंस चरा । चला है पढ़ने !

(विराम)

एक दिन शाहजी से सुना—तेरा बाप गाँव छोड़कर क्यों भागा, जानता है ? तीन सौ रुपया कर्ज था मेरा । सुबह शाम मेरी दुकान पर आकर दो घंटे काम कर

जाया कर । पाँच रुपये महीने के हिसाब से, आठ साल में कर्ज पट जायेगा । मैंने हिसाब जोड़कर कहा—पांच साल में कि आठ साल में ? शाहजी बोले—अबे, पाँच साल में मूलधन पटेगा, तीन साल में उसका ब्याज ।

(विराम)

एक रात गाँव के मैदान में, जहाँ पहले रामलीला होती थी, वहाँ मैंने एक राक्षस घूमते देखा, जिसके इतने लंबे लंबे हाथ थे । दूसरे दिन मारे डर के मैं यहाँ से भाग गया ।

सुराजी : वह डर अब तुम में नहीं है ?

सुरजा : तभी तो बाबा, इतने दिनों बाद गाँव लौटा । इसके पहले हिम्मत नहीं थी ।

ठाकुर : यह हिम्मत कब आई ?

सुरजा : आज से दस दिन पहले । जब वही राक्षस मैंने कलकत्ता शहर में भी देखा । मेरी जूट मिल में हड़ताल हुई । अगले दिन पुलिस ने मजदूरों की भीड़ पर गोली चलाई । तेरह मजदूर मरे, तीस घायल हुए । मैं अकेला था । मिल मालिक की कोठी में घुसकर रात के एक बजे, बम फेंकने जा रहा था । अचानक देखा—मेरी यूनियन का नेता, पुलिस अफसर के साथ, मिल मालिक के सामने बैठा हुआ शराब पी रहा है ।

सुराजी : अरे भाई, तू तो गहरे चला गया ।

सुरजा : अपनी आंखों से देख लिया । डर गायब हो गया । वहीं खड़े-खड़े हँसने लगा ।

(हँस पड़ता है ।)

ठाकुर : वही राक्षस गाँव में, वही राक्षस शहर में.....

सुरजा : जिस दिन देखा था, उस दिन डर गया था, जिस दिन उसे पहचान लिया, उस दिन भयमुक्त हो गया।

ठाकुर : क्या है उसकी पहचान ?

सुरजा : देखते रहने से पहचान मिलती है, देखकर डर से भाग जाने में नहीं। **(रुककर)** भय और अज्ञान, अज्ञान और भय, भय और अज्ञान, दोनों एक ही चीज हैं—बस, इतनी ही मेरी कमायी है। हजारों साल से जो यहाँ हो रहा है, उसकी जड़ में यही है। राक्षस पहचाना नहीं गया, उसे देखकर भागा गया। और एक कहानी बना ली गई। राम देवता, राक्षस रावण। राम ने युद्धकर रावण को मारा था। हमने इसे भुला दिया। अब हम सैकड़ों साल से रावण का पुतला बनाते हैं और उसे जलाकर राम की विजय दशमी मनाते हैं। रावण राक्षस था, यह केवल कथा है। हमने उसे नहीं देखा। इसीलिये हम उसका पुतला बनाकर जला देते हैं और हर साल यही कथा समाप्त करते हैं। ताकि हम अपने समय के प्रत्यक्ष राक्षस को कहीं देख न लें।

सुराजी : तुम्हारा विश्वास उस राक्षस को मारने में है ?

सुरजा : बिल्कुल। सोलहों आने।

सुराजी : तुम्हें हिंसा में विश्वास है ?

सुरजा : क्या राम को हिंसा में विश्वास नहीं था ? क्या कृष्ण को नहीं था ?

सुराजी : वह धर्मयुद्ध था।

सुरजा : अपने समय का लड़ा हुआ हर युद्ध धर्मयुद्ध होता है। धर्म केवल वर्तमान में है।

सुराजी : हिंसा में कल्याण नहीं है।

सुरजा : यह बात वे लोग क्यों नहीं जानते जो हिंसक हैं ? हिंसा अकल्याणकारी है, इसीकी पहचान के लिए हिंसा आवश्यक है।

ठाकुर : तुम्हारे लिए हिंसा क्या है ?

सुरजा : ना पहचान पाना ही हिंसा है।

(सन्नाटा)

सुरजा : **(पैर पकड़ कर)** बाबा। आप रो रहे हैं ?

सुराजी : कहाँ अदृश्य था तू ? आज मेरी तपस्या पूरी हुई। अब मैं पहचान रहा हूँ उस चतुर्भुज राक्षस को। जो लोग गरीब हैं, निरक्षर और सदियों से पिछड़े हुए हैं, जो आर्थिक और राजनीतिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हैं, उनके लिए यह आजादी, उनकी मुक्ति का वाहन न होकर उनके शोषण उत्पीड़न का साधन बन गई है। अस्सी प्रतिशत भारतवर्ष को बीस प्रतिशत लोग शूद्र मानते हैं। छुआछूत, जातिवाद, प्रांतवाद और सदियों से अंधविश्वास, कुसंस्कारों से मानवता का गला घुँटता चला जा रहा है। अंग्रेज चले गए। वे अपना तरीका हमें दे गए। अंग्रेजों ने इस देश को लूटने के लिए पूंजीपति और नौकरशाही का संगठन किया था और इसके दलाल के रूप में गाँव गाँव में जमींदार, नेताशाही को पैदा किया था। एक ओर गाँव का साहूकार, दूसरी ओर जमींदार, तीसरी ओर नेता, स्वराज्य के नाम पर यही त्रिगुट, हम जैसे देश भक्तों को भय और लालच दिखाकर खरीद रहा है और इस देश में चतुरभुज राक्षस पैदा हो रहा है। अगर इसे पहचाना नहीं गया, तो

यह राक्षस चारों भुजायें फैलाकर जनता को उसी तरह प्रेमालिंगन करेगा, जैसे महाभारत के धृतराष्ट्र ने भीम को बाहों में भरकर प्यार करना चाहा था।

ठाकुर : अपनी अपनी पार्टियाँ बनाकर यही नेता अपने क्षेत्र पर आतंक जमाये बैठे हैं और भेद का विष बोकर गाँवों पर राज्य करते हैं।

सुराजी : गाँवों से शहर तक यही प्रजातंत्र है। जमींदार पूंजीपति राजा है, जनता वही दुखी प्रजा है मध्ययुग की। वह लोग कहाँ पैदा हुआ, जहाँ सब समान हैं, जहाँ सब स्वतंत्र हैं।

(रामदास, गजाधर, महतो के साथ कुछ अन्य लोग आते हैं।)

रामदास : हम पर हुए अत्याचार कौन सुनेगा?

गजाधर : हम कहाँ जायँ न्याय माँगने?

महतो : अगर हम कहीं फरियाद करने जाते हैं तो नेता और जमींदार हमें पिटवाता है। हमारे घर फूंक दिये जाते हैं।

रामदास : हम पर फर्जी—झूठे मुकदमे चलाये जाते हैं।

एक आदमी : हम अपनी किस्मत को कोसकर रह जाते हैं।

रामदास : सरकार हमारे लिए जो कुछ करती है, गाँव के यही नेता दलाल बीच ही में सब लूट लेते हैं।

दूसरा आदमी : लोग हारकर गाँव से भाग जाते हैं और शहरों में पिस कर वहीं मर जाते हैं। सुरजा के बाप गोबरधन का आखिर क्या हुआ?

सुरजा : लेकिन सुरजा तो जिन्दा है।

महतो : क्या कर लोगे तुम?

सुरजा : तुम लोगों के साथ लडूंगा।

रामदास : सुराजी क्या नहीं लड़े? जेल में बन्द कर दिये जाते हैं। गाँवों में मारे-मारे फिरते हैं।

गजाधर : तुम भी लड़कर भागोगे। फिर गाँव छोड़कर भाग जाओगे।

सुरजा : नहीं। मैं अब यहाँ से नहीं भागूंगा।

रामदास : तुमको यहाँ से भगाने के लिए तैयारी की जा रही है।

गजाधर : नेताई, शाहजी और सहदेव जमींदार मिलकर जाल बुन रहे हैं।

ठाकुर : सुरजा अब वह नहीं है जो एक दिन यहाँ से अनाथ भागा था।

सुराजी : वह अब अकेला नहीं है।

सुरजा : सुनो पंचों! सुनो! अपने दिल पर हाथ रखकर गाँठ बाँध लो। जब कोई रोग समाज में इतने व्यापक रूप से फैल जाता है, तो समझ लेना चाहिए कि उसका कारण किसी का निजी दोष नहीं। वह पूरे वातावरण का जहर है। जब वातावरण जहरीला होता है तो समझो समाज के ढाँचे में, उसके भीतर ही विष का कारण छिपा रहता है। जब तक समाज का ढाँचा नहीं बदलेगा, विष रहेगा, विष बढ़ता चला जायेगा।

एक आदमी : ये भाषण तो हम बहुत सुनते आये हैं।

सुरजा : कभी कुछ और किया भी है? गरीबी, अन्याय, अत्याचार चुपचाप सहने के सिवा?

रामदास : फरियाद करते ही जहाँ सिर पर लाठी बरसती है।

गजाधर : भूखा गरीब कुछ नहीं कर सकता।

महतो : जो सदियों से डरा हुआ कुचलकर रख दिया गया है, उसको भगवान और भाग्य के सिवा और कुछ नहीं सूझता।

सुराजी : सुन लो, यही है वर्तमान की रामायण कथा।

ठाकुर : जबान बन्द हो जाती है। आँखों के सामने अंधेरा होने लगता है।

सुरजा : रामलीला होती थी इस गाँव में।

रामदास : होती थी पहले, अब दस ग्यारह साल से नहीं होती।

सुरजा : क्यों नहीं होती ?

गजाधर : जमींदार साहब, सहदेव बाबू कराते थे। शाहजी रुपये लगाते थे, नेताई चन्दा इकट्ठा करते थे।

सुरजा : सब काम यही लोग करते कराते थे। तुम लोग खुद कोई काम नहीं कर सकते ?

गजाधर : कभी कुछ किया होता तो......।

महतो : कुछ करने के लिए हौसला होना चाहिए बेटा।

सुरजा : वह कहाँ से आता है।

गजाधर : रुपये हों, साधन हो।

सुरजा : उसका प्रबन्ध मैं करूंगा।

महतो : तू रामलीला करेगा, यहाँ के ब्राह्मण लोग हरिजनों को जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।

ठाकुर : इसी का बहाना लेकर नेताई साम्प्रदायिक दंगे करा देगा। सबको जेल में पहुँचा देगा।

सुरजा : क्यों बाबा, हम रामलीला नहीं कर सकते ?

सुराजी : क्यों नहीं ? पर वही रामलीला क्यों करोगे ? रावण को जलाकर क्या पाओगे ? रावण, राम के जमाने का यथार्थ रहा होगा। तुम्हारे समय का यथार्थ क्या है ?

सुरजा : मैं इस दशहरे में वही दिखाना चाहता हूँ।

सुराजी : मैं तुम्हारे साथ हूँ।

ठाकुर : मैं भी साथ हूं।

रामदास : हम सब हैं।

(विराम)

महतो : गाँव में जैसे ही रामलीला की ढोलक बजेगी, नेताई को जैसे ही पता चलेगा, वह इसके खिलाफ कुचक्र फैलायेगा।

गजाधर : और जब उसे इस बात का पता चलेगा कि उस राक्षस की एक भुजा वही है, तो सबको लेकर वह सीधे मार-पीट पर उतर आयेगा।

महतो : वे कुछ भी कर सकते हैं।

सुरजा : लोग जागेंगे। अपने समय का प्रत्यक्ष राक्षस देखेंगे। पहचानेंगे। फिर लड़ाई शुरू होगी। जो भीतर है वह बाहर आयेगा। जो सोया है, जागेगा। जो कुचला हुआ है युगों से, वह सिर उठायेगा। जो अंधविश्वासों में जकड़े पड़े हैं उनमें अपना विश्वास पैदा होगा। कल से दशहरा शुरू हो रहा है। नटुआ काका से बोलो, दुर्गा-माई के थान पर ढोल बजना शुरू करें।

महतो : दस दिन केवल ढोलक बजेगी ?

सुरजा : गाँव के बाजे बजेंगे एक साथ; हर सुबह शाम। गाँव के सोये हुए देवी-देवता जागेंगे।

सुराजी : इससे शक्ति की पहचान मिलेगी। संबंध की क्रांति होगी।

तीसरा दृश्य

(मैना का दरवाजा। रात का समय। पृष्ठभूमि से गाँव में बजते हुए वाद्य-ध्वनियों का संगीत आ रहा है। सुरजा रंगीन कागज, दफ्ती और कपड़े काट रहा है। रंग चढा रहा है। मुखौटे और हाथ बना रहा है।)

मैना : इससे क्या होगा बेटा ? इससे पेट तो नहीं भरेगा।

सुरजा : मां, तू काठ का घोड़ा खेलकर क्या करती थी ?

मैना : उससे मैं सौ सवा सौ रुपये रात कमाकर अपना और दो तीन जनों का पेट पालती थी।

सुरजा : नहीं, उससे तू गाँव वालों को यह भी बताती थी कि राजा क्या होता है, नेताई कौन है, शाहजी और जमींदार क्या हैं। लोगों के अँधविश्वास क्या-क्या हैं। तभी तो नेताई कठघोड़ा के खेल का इतना विरोध करता है।

मैना : तेरे इस खेल को वे होने देंगे ?

सुरजा : माँ अगर तू ही इस तरह की बात करेगी तो क्या होगा ? तेरे ही साहस ने मुझे यह शक्ति दी, कि लड़ाई लड़ी जा सकती है।

मैना : जब मैं अकेली थी तब मुझे डर नहीं लगता था, जब से तू आया है, फिर वही डर मुझमें आने लगा है, जब तुम दोनों मुझे छोड़कर भाग गए थे।

सुरजा : भला ऐसा क्यों है माँ ?

मैना : इस लड़ाई का कोई अंत है ?

सुरजा : लड़ने वालों का भी अंत नहीं है।

(विराम)

मैना : तेरे पिता जिन्दा होंगे ? वह तो बहुत सीधे थे।

सुरजा : मेरे पिता जिन्दा हैं।

मैना : मेरे देवतन बाबा भी यही कहते हैं। वे जिन्दा हैं। वह एक दिन जरूर लौटकर आयेंगे। जैसे तू लौटकर आया है।

सुरजा : माँ, इधर आ (**माँ के मुख पर राक्षस का चेहरा लगता है**) देख कैसा है ! इसी पर चारों हाथ निकलेंगे।

मैना : मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

(चेहरा उतार देती है।)

सुरजा : तू सब समझती है ! तूने ही वह समझ दी। उस की पहचान तूने ही कराई।

मैना : जब मैं अकेली यहाँ अन्न बिना मर रही थी, ताल का घोंघा, आम की गुठली पर किसी तरह जिंदा थी, तब एक दिन मेरे देवतन आये........।

(वही तीनों पुरुष प्रकट होते हैं।)

पहला पुरुष : अंधकार है। पर जब तुम चलोगी, अँधेरा छँटने लगेगा।

दूसरा पुरुष : पेड़ पर पक्षी बोलने लगेंगे। सब कुछ दिखाई पड़ने लगेगा।

तीसरा पुरुष : राह में एक झरना मिलेगा : झरने को पार करते ही जंगल शुरू होगा।

पहला पुरुष : एक बार मुझे पत्ते खड़खड़ायेंगे ।

दूसरा पुरुष : सुनहला बाघ देखा है ?

तीसरा पुरुष : अपनी राह चलते हुए सोचना, जंगल में फूल क्यों खिलते हैं ? कैसे जिंदा रहते हैं ? किसके लिए ? क्यों ?

(तीनों गोलाई में खड़े रह जाते हैं ।)

सुरजा : माँ, तुझे अबतक अंधविश्वास है ?

मैना : वही मेरा विश्वास है ।

(**विराम**)

सुरजा : माँ, तूने सचमुच किसी की हत्या की ?

मैना : हाँ । देवतन गवाह हैं ।

सुरजा : दो जन की ?

मैना : हाँ । देवतन गवाह हैं ।

सुरजा : यह तुझसे हुआ कैसे ?

मैना : पता नहीं ।

(सुरजा चेहरे को अपने मुखपर लगाता है । हाथ को अपने कंधे से जोड़कर देखता है ।)

मैना : मेरे पास कुछ नहीं था । घर में अन्न का एक दाना भी नहीं । तीन दिन की भूखी थी । मुसाफिर आया, एक रात मेरे घर में रहने । वह खा पीकर यहाँ बाहर सोया था । मैं भूखी प्यासी भीतर पड़ी थी । आधी रात को उसने पानी माँगा । मैं उसे पानी देने गई । उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं अबला अकेली, फूट-फूट कर रोने लगी । अचानक देवतन बाबा प्रकट हुए । कहा—रोने से क्या होगा ! कुछ उपाय करने से होगा । करने से ही कुछ होता है । रोते रहने से मुख पर बैठी मक्खी भी नहीं उड़ती ।''''''''मैं उसे आँगन में ले आई और वहीं खाट पर सुलाकर इसी बांक से उसका सिर काट डाला ।

सुरजा : फिर ?

मैना : उसकी लाश को कंधे पर उठाकर गाँव के तालाब में डाल आई । उसके सामान को खोला—उसमें इतने सारे रुपये थे । मुझे लगा, यह मेरी कमाई है ।

सुरजा : कैसे ?

मैना : यह पता नहीं । मैं क्या जानूँ ? मुझे लगा । मुझे विश्वास मिला । **(रुककर)** दूसरी बार एक दूसरा मुसाफिर आया । परदेश से कमाकर अपने गाँव जा रहा था तब मैं अन्न बिना मर नहीं रही थी । वह सीधा और स्नेही था । मेरे लिए खाना ले आया था । मेरे लिए ममता भरी बातें कर रहा था । उसके व्यवहार में आदर सम्मान और बड़प्पन का भाव था । ना मैं उसे मारना चाहती थी, न मुझे उसके धन का लोभ था । **(विराम)** मैंने पानी में जहर घोलकर उसे पिला दिया'''''' ।

(रोने लगती है । सुरजा एकटक माँ को निहार रहा है ।)

सुरजा : मां, बिना बताये अगर उसी तरह रात को मैं तेरे घर आता, तो मुझे भी मार डालती ? बोलो माँ । माई, माई रे ।

मैना : सुरजा ।

(पुत्र को गले से लगाकर चीख पड़ती है । पृष्ठभूमि का संगीत तेज हो जाता है । फिर धीरे-धीरे दूर चला जाता है । मूर्तिवत मैना को सुरजा सम्हाले हुए है ।)

सुरजा : अपनी पहचान गायब होते ही दूसरों की पहचान चली जाती है। तब पहचान और नापहचान दोनों में अन्तर कर पाना खत्म हो जाना है। बाहर की परिस्थितियाँ भीतर के अँधेरे को बढ़ाकर हमारे अन्दर नापहचान को भयंकर रूप दे देती हैं। वही हमसे ऐसी हिंसा करा जाती है, जिसकी हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते। दूसरे को मार डालने में जिस भय का हाथ है, वह मुख यही है (**राक्षस का मुखौटा उठाकर देखता है**) जिस अंधकार से वे हाथ बढ़कर हमारे हाथों से वे कुकर्म कराते हैं, वे इसी विषाक्त वातावरण की देन हैं। (**उन्हीं चार हाथों को देखता है**) और हाथ हम सब हैं, इन तीनों हाथों की ताकत से डरे हुए। मां उठो ! यहाँ आओ ! बैठो ! (**खाट पर बिठा देता है**) तुम निष्पाप हो। मां हो ! जितना सहा है तूने, वही मेरी मां है। सारे अपराधों का मूल जिस धरती में छिपा है, जिस अज्ञान, अंधविश्वास में, उसे खोलकर देखना और पहचानना है। मां ! जो कुछ तुमने किया वही हैं हम। जो कुछ मैंने, मेरे पिता और इस गांव ने किया, वही हो तुम। मुझे यहाँ जन्म दिया, इस शूद्र अछूत बस्ती में, गरीबी के अंधकार में। मैं धन्य हूं, मेरी जन्मभूमि ऐसी पृथ्वी पर है, जिसकी पहचान हमने अपने आपको देकर की है। मेरा यह गांव इसीलिए मेरे हृदय का नीड़ है। हमारा मिलन तीर्थ है मां !

चौथा दृश्य

(गांव का मैदान। संध्या समय। सुरजा के दोनों हाथ उसकी पीठ पर बंधे हैं। आँखों पर पट्टी लगी है। नेताई, शाहजी, सहदेव और गांव के दो अन्य लोग सुरजा को धक्के देते हुए ले आते हैं।)

नेताई : बोल, अब क्या कहते हैं ?

सहदेव : चुपचाप गाँव से चला जाता है, या तेरी लाश कल गाँव के तालाब में उसी तरह तैरती मिले !

शाहजी : लीला करने आया था !

नेताई : हाँ, एक बात बता दूँ ! तेरे ही लाभ की है। हमारा असली दुश्मन तू नहीं, वही सुराजी मिसिर है। उसके साथ तेरा संयोग हम यहाँ बर्दाशत नहीं कर सकते।

सहदेव : ठाकुर की जगह हम तुझे इस गाँव का सरपंच बनायेंगे।

शाहजी : तेरे बाप पर, मां पर, जितना मेरा कर्ज है, मैं छोड़ दूँगा।

सहदेव : तेरे दोनों बीघे खेत मैं तुझे वापस कर दूँगा।

नेताई : हमसे मिलकर तू चैन से यहाँ रह। सुराजी को हम यहाँ से इसी रात गायब कर देंगे। पुलिस हमारे साथ है। यहाँ का सारा शासन हमारे इशारे पर चलता है। बोल ! हमारे पास इतना वक्त नहीं है। नहीं तो हम तेरी जान से आज यहाँ विजयदशमी मनायेंगे।

सुरजा : मैं बोलूँगा। मेरी आंख की पट्टी खोल दो।

नेताई : खोल दो पट्टी।

(एक आदमी पट्टी खोल देता है।)

सुरजा : अंधकार मुक्ति नहीं। यह देख पाना ही मुक्ति है। ना देख पाना जैसा भयंकर बंधन दूसरा कोई नहीं। मैं यहां से अब भागूँगा नहीं। सुराजी को कभी छोड़ूँगा नहीं। तुम्हारे आंतक और हिंसा के सामने घुटने नहीं टेकूँगा। तुम्हारी भिक्षा से बिकूँगा नहीं। लो मेरा बधकर मनाओ अपनी विजयदशमी। कौन कहता है यह सब लीला है? मिथ्या है? परम दुखी और परम सुख की साधना मिथ्या है?

नेताई : बकवास बंद कर।

सुरजा : यह तुमने अच्छा किया, हमें भूख, उत्पात, घृणा की चोट से जगाये रखा। यह भी अच्छा हुआ कि तुमने हमें अपार दुख, यातना देकर सम्मानित किया। उठाओ हाथ। मनाओ अपनी विजयदशमी का धर्म।

(वे उसे दबोच लेने के लिए बढ़ते हैं, उसी समय मैना हाथ में बांक लिए झपटती है। उसके पीछे गाँव के लोग हैं। नेताई और उसके लोग अपनी जान लेकर भागते हैं।)

मैना : कायर! हिंसक! भागते क्यों हो? सुनो। अपने पंजों के बल तुम अब देर तक खड़े नहीं रह सकते। टाँगों को फैलाकर आगे नहीं बढ़ सकते। अपनी बात का दावा करते हो, पर भागते क्यों हो?

(मैना सुरजा के बंधन काटती है।)

सुरजा : शुरू करो विजय दशमी की पूजा।

(संगीत बजने लगता है। गंगा अपने सिर पर राम की मूर्ति रखे आती है। गाँव के स्त्री-पुरुष पीछे-पीछे गाते हुए आते हैं।)

जौने दिन राम अयोध्या में जन्में
घर घर बाजै बधइया हो ना।
धनि है अयोध्या करम फल पाये
होइगे हमरी बड़इया होना॥

(ठाकुर अपने सिर पर हनुमान की मूर्ति लिए आते हैं। पीछे पीछे लोग गा रहे हैं।)

पछुआ से आवैं बिपति काली अँधिया
पुरबा से आवैं हनुमान अल्ला हो मियां।

(मैना अपने सिर पर चतुर्भुज राक्षस का पुतला उठाये आती है। लोग गा रहे हैं।)

डुगडुगी नगर में बाजी हो।
नेता शाह सहदेव राज का
खुलिगै सब दगाबाजी हो.....
डुगडुगी नगर में बाजी हो।

(राक्षस के पुतले को कभी सुराजी अपने सिर पर उठा लेते हैं, कभी ठाकुर, कभी सुरजा, कभी गाँव का कोई स्त्री-पुरुष। अंत में पुतले को बीच में रख दिया जाता है। उसके चारों ओर लोग घूम रहे हैं। वादक तेज संगीत बजा रहे हैं।)

पर्दा गिरता है।

चतुर्भुज

राक्षस

मित्रा ब्रदर्स